दैवी शक्ति के अनुदान और वरदान

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि
मथुरा

२००७ मूल्य : ६.०० रुपए

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

सन् २००७

मुद्रक :
युग निर्माण प्रेस, मथुरा

परोक्ष जगत की विवेचना एवं तथ्य भरे आधार

सृष्टा की नियति व्यवस्था ने न केवल जीवन का सृजन किया है, वरन् उसका निर्वाह ठीक प्रकार होता रहे, इस निमित्त अन्न, वनस्पति, जलवायु आदि का भी प्रचुर भाण्डागार मानव समुदाय हेतु उपलब्ध किया है। जिन साधनों के आधार पर हम जीवित हैं और अनेकानेक गतिविधियों का संचालन करते हैं, वे अपने पुरुषार्थ से नहीं उगाये गये हैं। पुरुषार्थ अपने स्थान पर सराहनीय है किन्तु यह नहीं भुला दिया जाना चाहिये कि जो उपलब्ध है उसमें परोक्ष से किसी अदृश्य सहायक का योगदान भी कम मात्रा में सम्मिलित नहीं है।

यह सामान्य जीवन व्यवस्था की बात हुई। इसके अतिरिक्त अनेकों बार ऐसी घटनायें भी दृष्टिगोचर होती हैं जिन्हें अदृश्य सत्ता की विशिष्ट सहायता कहा जा सकता है। वहुधा ऐसे प्रसंगों को संयोग कहकर टाल दिया जाता है, पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि यह एक मात्र संयोग नहीं है। प्रकृति व्यवस्था में ऐसे संयोगों के लिये गुंजायश नहीं है, जो साधारण नियमों का व्यतिक्रम करके किसी विशेष व्यक्ति को—विशेष अवसर पर—विशेष प्रकार की सहायता पहुँचा सकें।

शास्त्रों में विभिन्न लोकों का वर्णन मिलता है जिनमें मुक्त आत्मायें विचरण करती रहती हैं एवं शरीरधारी पृथ्वीवासियों की मदद हेतु सतत् तत्पर रहती हैं। इन लोकों को भौतिकी के "डायमेंसन" के आधार पर नही समझा जा सकता, क्योंकि सूक्ष्म होने के कारण इनकी स्थिति चतुर्थ आयाम से भी परे होती है। किन्तु साधना पुरुषार्थ से अर्जित दिव्य दृष्टि सम्पन्न शरीरधारी साधक स्वयं को सूक्ष्म रूप में बदलकर अथवा स्थूल स्थिति में इन आयामों के रहस्यमय संसार का दिग्दर्शन कर सकते हैं। इस संसार में अनेक कर्मों के अनुरूप सूक्ष्म आत्मायें फल पाती हैं एवं उसी आधार पर एक निश्चित अवधि तक उन्हें उसमें पड़ा रहना पड़ता है। यह एक सुनिश्चित तथ्य है।

शास्त्रों के अनुसार जन्म-मरण के चक्र में घूमता हुआ जीव स्वर्ग-नर्क, प्रेत-पिशाच, पितर, कृमि-कीटक, पशु एवं मनुष्य योनि प्राप्त करता है । इस दौरान उसे जो-जो गतियाँ प्राप्त होती हैं, शास्त्रों में उन्हें दो भागों में बाँटा गया है--कृष्ण या शुक्ल गति । इन्हें धूमयान तथा देवयान भी कहा गया है । छान्दोग्योपनिषद् में इन गतियों और जीवात्मा की विभिन्न स्थितियों का विस्तार से वर्णन किया गया है । गीताकार ने भी कहा है--

त्रैविद्या माँ सोमपाः पूत पापा ।
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते ।।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्र लोकमश्नन्ति ।
दिव्यान दिवि देवभोगान ।।
ते तं भुक्त्वा स्वर्ग लोकं विशालं ।
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।।

अर्थात्—वैदिक कर्मकाण्ड कर सकाम यज्ञों के द्वारा यज्ञ भगवान की पूजा द्वारा यज्ञशेष के सोमपान से निष्पाप बनकर श्रेष्ठ व्यक्ति स्वर्ग प्रयाण करते हैं, एवं वहाँ विभिन्न प्रकार के देव भोगों को भोगते हैं । उस विशाल स्वर्ग लोक में अनेकानेक भोगों को भोगने के उपरान्त जब पुण्य कर्म समाप्त हो जाता है, तो जीव पुनः इसी मृत्यु लोक में आते हैं ।" यहाँ यज्ञ से तात्पर्य प्राणाग्नि के स्फुरण एवं व्यक्तित्व के उदात्तीकरण से है । भजन प्रक्रिया के कर्मकाण्ड अनिवार्य तो हैं, पर प्रधान नहीं ।

अध्यात्मवेत्ताओं के अनुसार सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न व्यक्ति पृथ्वी पर बैठे-बैठे ही समस्त लोकों व उनमें निवास कर रहीं समस्त आत्माओं से सम्पर्क साधने में समर्थ होते हैं । इसके अतिरिक्त कुछ सूक्ष्म सत्तायें अन्तरिक्षीय लोकों में ही नहीं प्रत्युत पृथ्वी पर भी निवास करती हैं । वे अपनी ओर से शरीरधारियों से सम्पर्क साधने का पूरा प्रयास करती हैं, परन्तु सूक्ष्म जगत से अनभिज्ञ मनुष्य समुदाय के भयभीत होने से वे संकोच करती हैं, जबकि दृष्टा साधक उनसे पूरा सहयोग लेते हुए स्वयं को ही नहीं अपितु जीवधारी समुदाय को परोक्ष के वैभव से लाभान्वित कराते हैं ।

थियासॉफी समुदाय का मरणोत्तर जीवन पर पूरा विश्वास है एवं उनके मतानुसार जीवात्मा का सतत् विकास होता रहता है । इस कार्य में सृष्टा की विधि-व्यवस्था में सहयोग देने हेतु महान सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं का एक संघ है जिसका केन्द्र हिमालय के हृदय उत्तराखण्ड में है । यहाँ दुर्गम क्षेत्रों में स्थूल शरीरधारी सामान्यतया नहीं पहुँच पाते

किन्तु अपने श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार सूक्ष्म जीवात्मायें प्रवेश पाती रहती हैं। जब भी पृथ्वी पर कोई संकट आता है, श्रेष्ठ व्यक्तियों को सहयोग देने हेतु वे पृथ्वी पर आती हैं।

मुण्डकोपनिषद् में उल्लेख आता है---

"एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्च्चसः सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वदन्ति, प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्च्चयन्त्य : एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः ।।"

अर्थात्---"यज्ञ कर्म के फल से जो दिव्य लोक के अधिकारी होते हैं, ऐसे पुण्यात्मा पुरुष के मृत्युकाल में ज्योतिष्मति आहुतियाँ "आवो-आवो" कहकर पुकारती हैं तथा सूर्य किरणों की सहायता से दिव्यलोक में ले जाती हैं। वहाँ मधुर वचनों से उनकी अभ्यर्थना, अर्चना करती हैं। ऐसे पुण्यात्माओं की दिव्य लोकों में गति होती है।"

इस प्रकार शास्त्र वचनों में परोक्ष जगत एवं वहाँ रहने वाली सूक्ष्म आत्माओं के अस्तित्व के समर्थन में तो प्रतिपादन मिलते ही हैं, पृथ्वी पर बसने वाली श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा उनसे सम्पर्क स्थापित कर आदान-प्रदान के क्रम का प्रसंग भी प्रकाश में आता है। वैज्ञानिकों के अनुसार सूक्ष्म शरीरधारियों में एक्टोप्लाज्म नामक एक सूक्ष्म द्रव्य विद्यमान होता है जो पदार्थ के चतुर्थ आयाम से ऊपर की स्थिति है। संभवतः जीवात्मा उसी का उपयोग कर भौतिक आकार ग्रहण करती है जैसा कि अनेकानेक उदाहरणों से सिद्ध होता है। इसे "परसोनीफिकेशन" नाम दिया गया है व परामनोवैज्ञानिक इस पर अनुसंधान भी कर रहे हैं।

प्रसिद्ध भौतिकीविद् मार्टिन गार्डनर ने लिखा है कि "इस संसार में नित्य हजारों व्यक्तियों के साथ ऐसी छोटी-बड़ी घटनायें नित्य घटती रहती हैं। इनमें से कुछ को संयोग मान भी लिया जाय तो भी कुछ ऐसी विलक्षण होती हैं कि उन्हें मात्र संयोग नहीं कहा जा सकता।"

प्रत्यक्षवाद को ही प्रमुख मानने वाले अन्य वैज्ञानिकों के परिहास की उपेक्षा कर कतिपय परामनोवैज्ञानिकों एवं भौतिकीविदों ने ऐसी घटनाओं का संकलन कर विश्लेषण किया व पाया कि कोई अदृश्य शक्ति जिसकी अभी तक खोज नहीं हो पायी है, ऐसे प्रसंगों का कारण बनती है जिन्हें परोक्ष अनुदान-सहायता के रूप में देखा जाता है लेकिन संयोग या अपवाद करार दिया जाता है।

ब्रिटेन के भौतिकशास्त्री एवं सुप्रसिद्ध गणितज्ञ एड्रियन डॉब्स ने विभिन्न परीक्षणों के उपरान्त निष्कर्ष निकाला है कि "इस विश्व ब्रह्माण्ड में ऐसी सूक्ष्म संदेशवाहक शक्ति धारायें निरन्तर प्रवाहित होती रहती हैं जो

मानवी ज्ञानेन्द्रियों से सम्पर्क स्थापित करती रहती हैं । इन तरंगों की वेव लेंग्थ लगभग एक समान होती है ।" अपनी पुस्तक "द रूट्स ऑफ काइन्सीडेन्स" में डॉ० डॉब्स की इन खोजों पर टिप्पणी करते हुए आर्थर कोसलर ने लिखा है कि "इस माध्यम से ब्रह्माण्ड व्यापी अदृश्य शक्तियाँ शरीरधारी मनुष्यों से सम्पर्क साधतीं, उन्हें पूर्वाभास करातीं एवं संकट के समय मनोबल बढ़ाने वाला उत्कृष्ट चिन्तन देती हैं । इन्हीं को अदृश्य सहायक की उपमा भी दी जा सकती है । सम्भवतः उच्चस्तरीय सहायक आत्मायें सूक्ष्म जगत का प्रत्यक्ष जगत से सम्पर्क जोड़ने के लिये यही माध्यम अपनाती हों ।"

ऐसे अनेकों उदाहरण मिलते हैं जिनमें व्यक्तियों को ऐसे अप्रत्याशित लाभ मिले जो कि प्रयत्न करने पर सम्भवतः न मिल पाते । इन्हें दैवी अनुग्रह, भाग्य, पूर्व पुण्य अथवा वैज्ञानिकों की भाषा में संयोग कहा जाय, पर वे हैं ऐसे जिनकी मानवी प्रयत्न पुरुषार्थ से कहीं संगति नहीं बैठती । वैसी आशा-उपेक्षा भी नहीं रखी जाती, पर जब विचित्र संयोग सामने आता है तब वह उलझन उठना स्वाभाविक है कि प्रयत्न की परिणति वाला सिद्धान्त यहाँ क्यों उलट गया ?

वास्तव में अदृश्य जगत अपने आप में परिपूर्ण रहस्य रोमांच से भरी एक दुनियाँ है । वह उतनी ही विलक्षण है जितनी हमारी निहारिका, सौर-मण्डल एवं ब्रह्माण्ड का यह पूरा दृश्य परिकर है ! मनुष्य की स्वयं की अपनी दुनियाँ एवं समाज व्यवस्था है । उसी तरह जलचरों, सूक्ष्मजीवी, परजीवी, कृमि-कीटकों, वायरस, वैक्टीरिया आदि का भी अपना एक विलक्षण जगत है । उनकी भी अपनी रीति-नीति है एवं मनुष्य की दुनियाँ से सर्वथा भिन्न आवश्यकतायें एवं कठिनाइयाँ हैं । जो दृश्यमान नहीं हैं, ऐसा अदृश्य लोक मरणोत्तर जीवनावधि में रह रहे जीवधारियों का भी है, जिसके प्रमाण, उदाहरण आए दिन मिलते रहते हैं । पितर एवं अदृश्य सहायक यहीं रहते हुए निर्धारित समय व्यतीत करते हैं एवं समय आने पर समान गुणधर्मी आत्माओं से अपना सम्पर्क जोड़कर स्नेह-सौजन्य-सहकार का सिलसिला चलाते हैं । पितरगण अपने श्रेष्ठ जीवनकाल की ही तरह मरणोत्तर स्थिति में भी किसी के काम आने-सहायता पहुँचाने अथवा हितकारी परिस्थितियाँ बनाने में योगदान करना चाहते हैं । आत्मिकी का यह अध्यात्म रहस्यपूर्ण तो है ही अपने आप में शोध का विषय भी है ।

इस अदृश्य लोक की चर्चा के साथ-साथ यह भी बताना प्रासंगिक होगा कि कोई भी शरीरधारी साधना पराक्रम द्वारा मात्र अपनी इच्छा

शक्ति के बल पर सूक्ष्म लोकों के एक छोर से दूसरे छोर तक परिभ्रमण कर इन आत्माओं से सम्पर्क स्थापित कर सकता है । सूक्ष्म शरीर को क्रियाशील बनाने पर सामान्य काया में भी कोई अन्तर नहीं पड़ता । वेश-भूषा एवं जीवनचर्या यथावत् बनाये रखते हुए भी वे अपने सूक्ष्म शरीर से विभिन्न लोकों में आवागमन का क्रम बनाये रख सकते हैं । सूक्ष्मीकरण साधना के माध्यम से यही प्रयोजन पूरा किया जाता है । सन्तों, महामानवों, ऋषियों का अस्तित्व सदियों तक उनके इसी स्वरूप के कारण बना रहता है, जो होता है विचार तरंगों से बने सूक्ष्म शरीर के रूप में । समय-समय पर जो विकट समस्यायें मानवी पुरुषार्थ से सुलझती दिखाई देती हैं अथवा अदृश्य अनुदान पृथ्वीवासियों को मिलते हैं उनके मूल में सृष्टा की यही विधि-व्यवस्था काम करती है । अनास्था इसे संयोग कहती है, पर आस्थावानों को दैवी सत्ता की अनुकम्पा के प्रति कृतज्ञ होने एवं परोक्ष के प्रति अपना श्रद्धा विश्वास बढ़ाने का तथ्य भरा आधार उपलब्ध होता है ।

सबसे बड़ा है, ईश्वरीय न्याय

दैवी शक्तियाँ समय–समय पर अपने प्रिय पात्रों को सहयोग देती, अनुग्रह करती रहती हैं । साथ ही दुष्ट, आततायियों को उनके कुकृत्यों के लिये भयंकर दण्ड व्यवस्था भी करती हैं । सूक्ष्म जगत में विचरण करती दिव्य आतमाओं का सहयोग अनायास इस रूप में मिलते देखा गया है ।

इंग्लैण्ड के न्यायिक इतिहास में उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में एक ऐसी घटना घटी जिसने कानून व्यवस्था को भी चुनौती दे दी । इंग्लैण्ड के एक्सटर जेल में एक 'जान ली' नामक अपराधी बन्द था । हत्या के आरोप में न्यायालय द्वारा उसे मृत्यु दण्ड सुनाया गया । उस समय आज की तरह विद्युत द्वारा फाँसी दी जाने की व्यवस्था नहीं थी । मोटी रस्सी के फन्दे द्वारा फाँसी दी जाती थी ।

निर्धारित तिथि एवं समय पर डाक्टर ने उसके स्वास्थ्य की परीक्षा की । पादरी ने 'जान ली' के किये गये अपराधों के लिये परमात्मा से क्षमा प्रार्थना की । फाँसी का फन्दा उसके गले में डालने के पूर्व जल्लाद जेम्स वेरी ने फाँसी के उपकरणों की भली–भाँति जाँच कर ली । फाँसी का फन्दा बनाकर खींचे जाने वाले रस्से को ठीक किया । मजिस्ट्रेट की देख–रेख में अपराधी के गले में फाँसी का फन्दा डाला गया जल्लाद ने पीछे हटकर नीचे के तख्ते को खींचा, किन्तु तख्ता बिल्कुल नहीं हिला । पुनः तख्ते का निरीक्षण किया कि सम्भवतः कहीं जाम हो गया हो, किन्तु पाया वह बिल्कुल ठीक था । दुबारा जोर लगाकर तख्ता खींचा किन्तु आश्चर्य कि वह टस से मस न हुआ । जल्लाद ने तीसरी बार तख्ते की जाँच करने के बाद खींचने का प्रयास किया किन्तु असफलता ही हाथ लगी ।

तीसरी बार फाँसी पर चढ़ाये जाने की मानसिक पीड़ा से 'जान ली' भीषण ठण्ड में भी पसीने से डूब गया । मजिस्ट्रेट सामने खड़ा सारी कार्यवाही देख रहा था । उसके जीवन की यह अभूतपूर्व घटना थी । वह विस्मित था कि फाँसी के सारे उपकरण ठीक होते हुए भी तख्ता खिसक क्यों नहीं रहा है । निरन्तर सात मिनट तक अथक प्रयास तथा

तीन बार फाँसी के तख्ते पर चढ़ाये जाने पर भी उसे मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सका। कुछ समय के लिये फाँसी को स्थगित करने का आदेश दिया गया। फाँसी का निर्धारित समय बीत गया।

सर विलियम कोर्ट में इस मामले को प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया गया कि न्यायालय द्वारा निर्धारित समय पर पूरी सतर्कता एवं सावधानी रखने के बाद भी मृत्यु दण्ड न दिया जा सका। अतः न्याय की रक्षा के लिये अगला समय निर्धारित किया जाय। उच्च न्यायालय ने अपील को निरस्त करते हुए कहा कि "अपराधिक दण्ड प्रक्रिया संहिता के अनुसार न्यायालय द्वारा मृत्यु दण्ड की सारी कार्यवाही पूरी हो चुकी है। इस समय को आगे बढ़ाना न्यायालय के क्षेत्राधिकार के बाहर है। विश्व के न्यायिक इतिहास में यह एक आश्चर्यजनक घटना थी, जबकि एक व्यक्ति को निरन्तर सात मिनट तक फाँसी दी जाती रही हो और वह बच गया हो।

पत्रकारों ने 'जान ली' से पूछा कि 'वह कैसे बच गया।' उत्तर में उसने कहा कि वह निर्दोष था, हत्या में उसे किसी प्रकार फँसा दिया गया था। अपनी सफाई एवं समुचित साक्ष्य वह न्यायालय में प्रस्तुत नहीं कर सका, जिससे उसको मृत्यु दण्ड मिला। फाँसी के तख्ते पर ईश्वरीय न्याय सहयोग की प्रार्थना वह निरन्तर करता रहा। सतत् किसी ईश्वरीय अदृश्य शक्ति का अनुदान बरसते उसने अनुभव किया।

सन् १९५३ की बात है फ्रांसीसी ड्यूक डिगाइज की हत्या के अपराध में जान पाल ट्रौट नामक एक व्यक्ति को मृत्यु दण्ड दिया गया। मारने का तरीका यह निश्चित किया गया कि उसके दोनों हाथ, दोनों पैर चार अलग-अलग मजबूत घोड़ों से बाँध दिये जायें। घोड़े एक साथ दौड़ाये जायें ताकि अपराधी के चार टुकड़े हो जायें। नियत व्यवस्था के अनुसार सेना के बलिष्ठ घोड़ों को घुड़सवारों द्वारा दौड़ाया गया, पर आश्चर्य यह है कि घोड़े आगे न बढ़ सके। कैदी इतना मजबूत था कि उसका कोई अवयव न तो उखड़ता था और न ढीला पड़ता था। घोड़े तीन बार बदले गये। बारहों घोड़े जब असफल रहे तो उसे रिहा कर दिया गया। बाद में उसने बताया कि उसे कोई अदृश्य शक्ति सतत् सम्बल देती रही कि 'तूने कुछ नहीं किया है, तेरा कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।"

वियना के प्रख्यात चित्रकार जोसेफ आयनागर के पीछे-पीछे मौत का साया फिरता था। जाने-अनजाने उसे कई बार मौत ने घेरा, पर

उसका अदृश्य एवं अपरिचित सहचर उसे हर बार बचाता रहा । सन् १८८० में बुडापेस्ट में उसने फाँसी लगाकर आत्महत्या की । बचाने के लिये वह अदृश्य सहचर पहुँचा और रस्से से नीचे उतार लिया । सन् १८८८ में क्रान्तिकारियों के रूप में शासन ने उसे मृत्यु दण्ड दिया । तब भी एक अपरिचित कैमूनियन भिक्षु ने राजा से मिलकर रद्द कराया । अन्ततः उसने ६८ वर्ष की आयु में अपने सीने में आप गोली मारकर आत्महत्या कर ली । अन्तिम संस्कार कराने के लिये भी भिक्षु उपस्थित रहा जिसने पहले दो अवसरों पर उसकी सहायता की थी ।

यह सब मात्र संयोग नहीं :

फ्रांस के प्लोइरसेल नगर का निवासी कैसिमीर पालेमस नामक व्यक्ति अपने जीवन में तीन बार जलपोत की दुर्घटना में फँसा और तीनों बार अकेला बच गया । वह साधारण व्यापारी था और काम चलाऊ तैरना जानता था । ११ जुलाई १८७५ में 'जीएन्ने कैथेरिम' नामक जहाज के जल समाधि लेने पर वह अकेला ही बच पाया । इसी प्रकार ४ सितम्बर १८८० में ट्रीपज फ्रेरीज और १ जनवरी १८८२ को एल० ओडियन जहाज डूबे । उनके भी सारे यात्री डूब गये किन्तु अकेला वही व्यक्ति किसी प्रकार अपनी जान बचा सकने में सफल हुआ ।

सन् १८८३ में इटली के सैन बुर्ज क्षेत्र में एक विचित्र भूकम्प युक्त विस्फोट हुआ । इससे अगणित इमारतें टूटीं और धन-जन की क्षति हुई । आश्चर्य की बात यह है कि नगर के प्रधान प्रार्थना कक्ष को चाक पर चढ़े बर्तन की तरह घुमाया और बिना किसी प्रकार की क्षति पहुँचाये दूसरी जगह ज्यों का त्यों खड़ा कर दिया । जबकि मठ का अन्य भाग टूटकर विस्मार हो गया ।

ट्यूबिन नामक एक जर्मनी नागरिक सन् १८५७ में पैदा हुआ और १९२४ में मरा । इन ६७ वर्षों में उसे अनेक बार प्राण घातक दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा, पर वह हर बार सकुशल बच गया ।

एक बार जंगली सुअर की मुठभेड़ में वह चारों खाने चित्त गिरा और खड्ड में गिर जाने पर किसी प्रकार बचा । एक बार बाढ़ क्षेत्र में दौरा करते समय उसका घोड़ा कीचड़ में फँसने पर गिरा । घोड़ा ऊपर सवार नीचे, मुश्किल से प्राण बचे । एक बार डाकुओं ने उस पर दस गोलियाँ चलाई, पर लगी एक भी नहीं । एक बार बर्फीले पहाड़ के नीचे से गुजरते समय एक भारी हिमखण्ड ऊपर गिरा और वह तब तक दबा रहा जब तक कि बर्फ पिघल कर बह नहीं गयी । एक बार वह

अंधड़ में फँसा और राइन नदी में डूबने-उतराने लगा । एक बार एक भारी पेड़ उस पर गिरा, पता चलने पर जब लकड़ी उठायी गयी तब वह नीचे से निकला । एक बार एक नाव से नदी में गिर पड़ा । ऐसी-ऐसी और भी अनेकों दुर्घटनायें उस पर से गुजरीं पर हर बार मौत को चुनौती देते हुए वह जीवित बच गया ।

अदृश्य अनुदान :

कितने ही अवसरों पर किन्हीं-किन्हीं को अदृश्य सहायतायें मिलती रहती हैं । इन्हें दैवी अनुदान या वरदान माना जाता है । ऐसी उपलब्धियाँ जिन्हें प्राप्त हुई हैं, उनके उदाहरण समय-समय पर सामने आते रहते हैं ।

सन् १८६७ की एक घटना है । बेल्जियम के पियरे डिरूडर नामक व्यक्ति का पैर पेड़ पर से गिरने के कारण टूट गया । हड्डी जुड़ी नहीं वरन् नासूर की तरह रिसने लगी । जख्म किसी तरह भरता ही न था । बड़ी कठिनाई से ही वे किसी प्रकार दर्द से कराहते पट्टी बाँधे किसी तरह थोड़ी दूर चल सकते थे । जहाँ से पैर टूटा था, वह जगह टेढ़ी-कुबड़ी हो गयी थी । ऐसी स्थिति तक पहुँचे हुए मरीज को ठीक कर देने का वायदा किसी सर्जन ने भी नहीं किया ।

निराश पियरे के मन में एक दिन उमंग उठी, वे सन्त लॉरेंस की समाधि तक घिसटते हुए पहुँचे । घुटने टेककर देर तक रोते और दिवंगत सन्त की आत्मा से सहायता की प्रार्थना करते हुए दिन भर बैठे रहे ।

संध्या होते-होते वापस लौटने का समय आया तो वे सामान्य मनुष्यों की तरह उठकर खड़े हो गये और सही पैर लेकर घर लौट आये । परिचितों में से किसी को भी इस घटना पर विश्वास न हुआ । प्रत्यक्ष देखने वालों की भारी भीड़ लगी रही । सभी की जीभ पर अदृश्य वरदान की चर्चा थी ।

दक्षिण इटली के फोगिया कस्बे में एक दम्पत्ति के यहाँ नौ वर्षीय बालक जियोवेनियो-लिटिल जान रीढ़ की बीमारी के कारण नन्हें बच्चों जैसा घिसट-घिसट कर हाथ-पैरों के बल चला करता था । एकदिन जियोवेनियो फोगिया की सड़कों पर घिसटता चल रहा था, अचानक उसे अपनी पीठ पर दिव्य स्पर्श का अनुभव हुआ । नजर उठाकर ऊपर देखा तो बगल में एक साया खड़ा था । कुछ पूछने से पहले ही वह अदृश्य हो गया और जियोवेनियो कृतज्ञता से उसकी कृपा को मन ही मन सराहता

रहा । उसकी अपंगता दूर हो गयी थी ! वह उठ खड़ा हुआ और दौड़ता हुआ घर आया । अदृश्य सहायक की कृपा से वह कृतार्थ हो चुका था ।

सन् १९१९ में लिवरपूल में जेम्स नामक एक व्यक्ति के साथ जो कभी फौज में रह चुका था–एक घटना घटित हुई । लड़ाई के दौरान तोपों की भयंकर गर्जना के कारण उसके कान के पर्दे फट गये और वह बहरा हो गया था । पेंशन पर जाने के बाद एक रात उसने स्वप्न में देखा कि लिवरपूल के पवित्र सेंटविनिफ्रेड कुएँ के पास खड़ा होकर उसमें से जल निकाल कर स्नान कर रहा है । जैसे ही पानी शरीर पर पड़ा कि शीत की–सी कँपकँपी लगी और उसी क्षण उसकी नींद टूट गयी । वह हड़बड़ा कर उठ बैठा । पास में सो रहे उसके घर वालों ने पूछा––कौन ? यह शब्द सुनते ही जीवन में नया प्रकाश आ गया । उसने आश्चर्यपूर्वक बताया––मैं जेम्स, पर क्या हुआ ? कैसे हुआ ? जिस बहरेपन को डाक्टर नहीं ठीक कर पाये वह एक स्वप्न ने ठीक कर दिया ।

रेवरेण्ड फ्रीमैन विल्स की लँगड़ी टाँगें भी इसी तरह स्वप्न में ही ठीक हुई थीं । स्वप्न में विल्स ने देखा कि किसी फरिश्ते ने आकर उनकी टूटी हुई टाँगों पर प्रकाश की किरण इस प्रकार फेंकी जैसे कोई प्लाज्मा लाइट वेल्डिंग करते समय फेंकी जाती है । स्वप्न टूटते ही उसने अपनी टाँगों को पूर्ण स्वस्थ पाया । यह घटना भी स्वप्न सत्ता की सर्व समर्थता का बोध कराती है ।

पुराणों में ऐसी कथायें बहुतायत से पढ़ने को मिलती हैं, जिनमें यह बताया गया होता है कि किसी देवता ने किसी भूखे–प्यासे व्यक्ति को आकाश से भोजन भेजा, सवारी भेजी, वाहन भेजे, सहायतायें प्रस्तुत कीं । भूखे–प्यासे उत्तंग को देवराज इन्द्र ने अन्न–जल दिया था । अश्विनी कुमार आकाश मार्ग से देव औषधि लेकर च्यवन ऋषि के पास आये थे और उन्हें अच्छा किया था । भगवान राम को 'विरथ' देख इन्द्र ने अपना रथ भेजा था । द्रौपदी की सहायतार्थ कृष्ण भगवान ने उनकी साड़ी को योजनों लम्बी कर दिया था । बाईबिल में ऐसे वर्णन आते हैं जब महाप्रभु ईसा को देवताओं ने देव भोग भेजे थे । इन कथाओं में बहुत–सा अन्ध विश्वास भी हो सकता है, पर विज्ञान और तथ्य भी कम नहीं हो सकता । प्रस्तुत घटना इस बात का प्रमाण है कि विशाल ब्रह्माण्ड में ऐसी शक्तियों का अस्तित्व है जो असंभव को भी संभव कर दिखाती हैं ।

सन् १८८१ के मध्य में कैप्टन नीलकरी अपने दो बच्चों के साथ लारा जहाज को लेकर लीवरपूल के सान फ्रांसिस्को की ओर समुद्री लहरों के साथ आँख मिचौनी खेलते गन्तव्य की ओर बढ़ते चले जा रहे थे । मैक्सिको की पश्चिमी खाड़ी से १५०० मील पूर्व लारा में आग लग गई । कैप्टन नील अपने परिवार तथा ३२ अन्य जहाज कर्मियों के साथ जान बचाने के लिये लारा को छोड़कर तीन छोटी लाइफ बोटों पर सवार हो गये ।

लम्बी जलयात्रा तय करते हुए सभी व्यक्तियों को प्यास सताने लगी । दूर–दूर तक फैले अथाह समुद्र में पीने योग्य मीठे पानी का कहीं कोई चिन्ह दिखाई नहीं दे रहा था । प्यास के मारे ३६ सदस्यीय यात्रियों में से ६ जहाज कर्मी बेहोश हो गये ।

कैप्टन करी को निद्रा आ गयी और स्वप्न में देखा कि पास में कुछ दूरी पर समुद्र के छोटे से घेरे में हरा पानी कोई पादरी वेशधारी सन्त उसे बता रहा है जो पीने के योग्य है । निद्रा भंग हुई और कैप्टन का जहाज हरे पानी पर तैर रहा था । थोड़ा–सा पानी एक बर्तन में लेकर कैप्टन ने पिया तो पाया कि स्वप्न में देखे पानी से अधिक मीठा और स्वच्छ जल था । सभी ने पानी पिया और जीवन की सुरक्षा की । कैप्टन नील ने इसे समुद्री नखलिस्तान की संज्ञा दी । यह कैसे किस प्रकार उन्हें उपलब्ध हुआ ? कौन वह पादरी था व कैसे सहायता हेतु आया? इस पूर्वाभास की संगति बिठा सकने में कोई समर्थ नहीं था ।

ऐसे अनुदान कभी–कभी किन्हीं को अनायास ही मिल जाते हैं, यह अपवादों की बात हुई । उनके पीछे निश्चित आधार यह है कि मनुष्य अपने व्यक्तित्व को वैसा बनाये जैसा देव वर्ग को प्रिय है । आत्म परिशोधन की तपश्चर्या में तथा लोक–मंगल की सेवा–साधना में संलग्न ऋषि–कल्प व्यक्तियों को ऐसे अनुदान अपनी पात्रता के आधार पर विपुल परिमाण में उपलब्ध होते रहते हैं । ऐसे प्रमाणों की लम्बी श्रृंखला है ।

सन् १६८५ में फ्रांस के राजा लुईस चौदहवें के विरुद्ध जनता ने विद्रोह कर दिया । १७०२ में जगह–जगह गुरिल्ला युद्ध होने लगे । सेना नायक क्लैरिस नामक एक प्रोटेस्टैन्ट विद्रोही था । राजा को परास्त करने और अपने को वरिष्ठ, योग्य घोषित करने के लिये उसने अग्नि परीक्षा देने की बात कही ।

लकड़ियों से ऊँची चिता बनाई गई और क्लैरिस समाधि की स्थिति में उस पर चढ़कर खड़ा हो गया । चिता में आग लगा दी गई ।

धीरे-धीरे आग की लपटों ने क्लैरिस को चारों तरफ से घेर लिया और क्लैरिस मैदान में उपस्थित ६०० लोगों की भीड़ को सम्बोधित करता रहा । लकड़ियाँ जलकर राख हो गयीं । आग बुझ गई तब तक क्लैरिस का भाषण चलता रहा । क्लैरिस अग्नि परीक्षा में विजयी रहा । उसे आँच तक नहीं आयी ।

प्रगति भी सहज, सम्भव :

दैवी सत्तायें अपने सहयोग से मनुष्य की समृद्धि और प्रगति को भी सहज संभव बनाती देखी गयी हैं ।

अमेरिका के एक दरिद्र व्यक्ति आर्थर एडवर्ड स्टिलवैल ने अपनी जिन्दगी ४० डालर प्रति मास जैसी कुलीगीरी की छोटी-सी नौकरी से आरम्भ की और प्रेतात्माओं की सहायता से उच्चश्रेणी के यशस्वी धनवान विद्वानों की श्रेणी में सहज ही जा पहुँचा ।

पन्द्रह वर्ष की आयु से ही उसके साथ अदृश्य सहायकों की एक मण्डली जुड़ गयी और जीवन भर उसका साथ देती रही । इनमें तीन इन्जीनियर एक लेखक, एक कवि और एक अर्थ विशेषज्ञ की तरह मार्गदर्शन करती थीं । इनके साथ उसकी मैत्री बिना किसी प्रयोग परिश्रम के अनायास ही हो गयी और वे उसे निरन्तर उपयोगी मार्गदर्शन कराते रहे ।

सहायकों ने उसकी लगी लगाई नौकरी छुड़वा दी और कहा चलो तुम्हें बड़ा आदमी बनायेंगे । उनने उसे अपने रेल मार्ग बनाने, अपनी नहर खोदने, अपना बन्दरगाह बनाने के लिये कहा । बेचारा आर्थर स्तब्ध था कि नितान्त दरिद्रता की स्थिति में किस प्रकार करोड़ों-अरबों रुपयों से पूरी हो सकने वाली योजनायें कार्यान्वित कर सकने में सफल होगा, पर जब उन सत्ताओं ने सब कुछ ठीक करा देने का आश्वासन दिया तो उसने कठपुतली की तरह सारे काम करते रहने की सहमति दे दी और असम्भव दीखने वाले साधन जुटने लगे ।

आर्थर पूरी तरह दैवी सत्ता पर निर्भर था । उसके पास न तो ज्ञान था और न साधन । फिर भी उसके शेखचिल्ली जैसे सपने एक के बाद एक सफलता की दिशा में बढ़ते चले गये और धीरे-धीरे अपनी सभी योजनाओं में जादुई ढंग से सफल होता चला गया । २६ सितम्बर १९२८ को वह मरा तो अपनी अरबों की धनराशि छोड़कर मरा । उसकी अपनी पाँच लम्बी रेलवे लाइनें थीं । जहाजों के आने-जाने की क्षमता से सम्पन्न विशालकाय नहर पोर्ट आर्थर बन्दरगाह भी उसका अपना था और भी

उसके कितने ही अरबों रुपयों की पूँजी के अर्थ संस्थान थे ।

उसने साहित्य के तथा कविता के प्रति प्रसिद्ध तीस ग्रन्थ भी लिखे, जो साहित्य क्षेत्र में भली प्रकार सम्मानित हुए । आर्थर से उसकी सफलताओं का जब भी रहस्य पूछा गया तो उसने अपने संरक्षक देवों की चर्चा की और बताया प्रत्येक महत्त्वपूर्ण योजना, अर्थ साधनों की व्यवस्था, कठिनाइयों की पूर्व सूचना, गतिविधियों में तोड़-मरोड़ की सारी जानकारी और सहायता इन दिव्य सहायकों से ही मिलती रही है । उसकी अपनी योग्यता नगण्य है । साहित्य सृजन के संबंध में भी उसका यही कथन था कि यह कृतियाँ वस्तुतः उसके लेखक और कवि अदृश्य सहायकों की ही हैं । उसने तो कलम कागज भर का उपयोग करके यह प्राप्त किया है ।

इसी तरह अन्यान्य क्षेत्रों में भी कितने ही लोग अदृश्य दैवी सहायता पाकर धन्य बने और कृत-कृत्य हुए हैं ।

रोजमेरी का अदृश्य संगीत शिक्षक :

लन्दन की एक महिला रोजमेरी ब्राउन परलोक वेत्ताओं के लिये पिछली तीन दशाब्दियों से आकर्षण का केन्द्र रही हैं । वे संगीत में पारंगत हैं । बहुत शर्मीले स्वभाव की हैं । भीड़-भाड़ से, सार्वजनिक आयोजनों से दूर रहती हैं और अपनी एकान्त साधना को शब्द ब्रह्म की साधना के रूप में करती हैं ।

आश्चर्य यह है कि उनका कोई मनुष्य शिक्षक कभी नहीं रहा । उन्हें इस शिक्षा में अदृश्य सहायक सहायता देते रहे हैं और उन्हीं के सहारे वे दिन-दिन प्रगति करती चली हैं । उनकी संगीत साधना तब शुरू हुई जब वे सात साल की थीं । उन्होंने एक सफेद बालों वाली-काले कोट वाली आत्मा देखी जो आकाश से ही उतरी और उसी में गायब हो गयी । उसने कहा कि मैं संगीतज्ञ हूँ, तुम्हें संगीतकार बनाऊँगा । कई वर्ष बाद उसने विख्यात पियानो वादक स्वर्गीय फ्राजलिस्ट का चित्र देखा वह बिल्कुल वही था जो उसने आकाश में से उतरते और उसे आश्वासन देते हुए देखा था ।

बचपन में वह कुछ थोड़ा ही संगीत सीख सकीं । पीछे वह विवाह के फेर में पड़ गयीं और जल्दी ही विधवा हो गयीं । उन दिनों उनकी गरीबी और परेशानी भी बहुत थी, फिर मृतात्मा आई और कहा संगीत साधना का यही उपयुक्त अवसर है । उसने कबाड़ी की दूकान से एक टूटा पियानो खरीदा और बिना किसी शिक्षक के संगीत साधना आरंभ कर

दी । रोजमेरी ब्राउन का कहना है कि उसका अशरीरी अध्यापक अन्य संगीत विज्ञानियों को लेकर उसे सिखाने आता है । उनके मृतात्मा शिक्षकों मे वाख, बीठो, फेन, शोर्पे, देबुसी, लिस्ट, शूबर्ट जैसे महान संगीतकार सम्मिलित हैं, जो उसे ध्वनियाँ और तर्ज ही नहीं सिखाते उसकी उँगलियाँ पकड़ कर यह भी बताते हैं कि किस प्रकार बजाने से क्या सुर निकलेगा । गायन की शिक्षा में भी वे अपने साथ गाने को कहते हैं । वे यह सब प्रत्यक्ष देखती हैं, पर दूसरे पास बैठे हुए लोगों को ऐसा कुछ नहीं दीखता ।

रोजमेरी ने एक जीवित शिक्षक को परीक्षक के रूप में रखा है । यह सिर्फ देखता रहता है कि उनके प्रयोग ठीक चल रहे हैं या नहीं । ऐसा वह इसलिये करती हैं कि कहीं उसकी अन्तःचेतना झुठला तो नहीं रही है । उसके अभ्यास सही हैं या गलत । पर वह दर्शक मात्र अध्यापक उसके प्रयोगों को शत-प्रतिशत सही पाता है । रोजमेरी लगभग ४०० प्रकार की ध्वनियाँ बजा लेती हैं । बिना शिक्षक के टूटे पियानो पर बिना निज की उत्कृष्ट इच्छा के यह क्रम इतना आगे कैसे बढ़ गया, इस प्रश्न पर विचार करते हुए अविश्वासियों को भी यह स्वीकार करना पड़ता है कि इस महिला के प्रयासों के पीछे निस्संदेह कोई अमानवी शक्ति सहायता करती है ।

दण्ड की व्यवस्था :

दूसरों के विनाश का ताना-बाना बुनने वाले स्वयं उससे बच नहीं पाते प्रत्युत अधिक ही हानि हिस्से में आती है । इसका एक उदाहरण उस समय देखने को मिला जब एक वैज्ञानिक स्वयमेव तोप के गोले के साथ निकलकर अपनी पत्नी से टकराकर चकनाचूर हो गया ।

वेनिस के फ्रान्सिस्को डीले वार्च नामक वैज्ञानिक की उन दिनों बड़ी चर्चा थी, जब उसने एक ऐसे सशक्त राकेट का निर्माण किया था, जो ३००० पौण्ड का गोला लेकर उड़ लेता था । एक बार जब युगोस्लाविया की घेराबन्दी तोड़ने के लिये उसका उपयोग हो रहा था, तभी अचानक आविष्कारक भी गोले के साथ मशीन में फँस जाने से निकल पड़ा और किसी काम से आई हुई अपनी पत्नी से टकराकर चकनाचूर हो गया । दोनों को एक साथ ही दफनाया गया ।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय जो घटना घटी, वह भी चौंका देने वाली थी । आर्कटिक क्षेत्र में घूमते हुए एक जर्मन विध्वंसक जहाज को लक्ष्य बनाकर जैसे ही ब्रिटेन के युद्धपोत ट्रिनिडाड ने तारपीडो छोड़ा

वैसे ही कुछ क्षणों में लक्ष्य से छिटककर वह 'तारपीडो' लौटा अपने ही युद्धपोत से टकराकर उसने उसे नष्ट कर दिया ।

पश्चिमी यूरोप के केलगाल इलाके में १२५७ ई० में एक बागी सेनापति पॉस्थुमस ने सैनिक टुकड़ी के माध्यम से भारी लूटपाट मचायी । लुटेरे सैनिक खुद मालामाल हो गये और सेनापति को रोम का राजा घोषित कर दिया, परन्तु 'पॉस्थुमस' की दुर्गति होने में भी अधिक दिन नहीं लगे । सैनिकों की अपनी मनमानी चल ही रही थी । इसी बीच एक बार उनने जर्मनी के एक नगर 'मेज' को लूटने की अनुमति माँगी, अनुमति न मिलने पर 'पॉस्थुमस' को ही गोली से उड़ा दिया और स्वच्छन्द होकर लूटपाट करते रहे । अनीति का साम्राज्य अधिक दिन नहीं टिकता । रूस में काउण्टइवान सेंटपीटर्स वर्ग में अपनी पत्नी अन्ना, दो बच्चों व बूढ़े नौकर के साथ रहकर वहाँ की जागीरदारी सँभालता था । तब रूस में साम्यवादी क्रान्ति चल रही थी । इवान और अन्ना देखने में तो बड़े भोले-भाले लगते थे, पर थे बड़े क्रूर । उनने सैकड़ों व्यक्तियों को अपने क्रूर कृत्य का शिकार बनाया । जब करेलिया के लोगों ने उनके विरुद्ध आवाज उठानी शुरू की तब वह डरकर वहाँ से भाग गये और नेवा नदी के तटीय प्रदेश में एक परित्यक्त झोंपड़ी में शरण ली । रात हुई तो पति-पत्नी अपने बच्चों के साथ लेट गये । प्रकाश के लिये कंदीलें जला लीं, किन्तु हवा के एक झोंके के साथ कंदीलें बुझ गयीं । दुबारा कंदीलें जलायीं तो देखा कि लोमड़ियों का एक झुण्ड उन्हें घेरे खड़ा है । वे अत्यन्त भयभीत हो गये, परन्तु तुरन्त ही लोमड़ियाँ न जाने कहाँ लुप्त हो गयीं ।

इवान का बूढ़ा नौकर भोजन की तलाश में बाहर गया हुआ था । जब वह लौटा तो मालिक व मालकिन को झोंपड़ी में अचेत पड़ा देखा और पास ही खड़ी थी एक काली भयंकर छाया । उसने गरजकर कहा-"मल्लाह ! तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं, किन्तु तुम्हारा स्वामी अब बच नहीं सकता । उसने सैकड़ों निरपराधों की जानें ली हैं । उसके पाप का घड़ा अब भर चुका है ।" इतना कहकर छाया ओझल हो गयी । बूढ़ा नौकर भावी अनिष्ट की आशंका से भयभीत हो उठा । किन्तु उसने अपना साहस नहीं खोया और अपने मालिक के होश में आने का इन्तजार करता रहा । इस बीच झोंपड़ी में तरह-तरह की आवाजें सुनायी पड़ती रहीं । रात के तीसरे पहर के करीब इवान और अन्ना की नींद झोंपड़ी की दीवार गिरने से खुल गयी और उसी के साथ प्रकट

हुआ खूँखार सील मछलियों का एक झुण्ड । मछलियों ने उन दोनों पर आक्रमण किया तो वे डरकर भागे नदी की ओर । नदी के तट पर पहुँचकर उनने जल्दी-जल्दी नदी पर बँधी नौकायें खोलीं और उन पर सवार हो नदी पार करने लगे । वे अभी बीच धार में थे कि अचानक न जाने कहाँ से लाल रंग की लोमड़ियाँ आकाश से प्रकट हुई और अन्ना की ओर झपटीं । डर के मारे अन्ना नदी में कूद पड़ी, जहाँ सील मछलियों ने उसका काम तमाम कर दिया । नाव कुछ ही आगे बढ़ी होगी कि इवान पर भी लोमड़ियों ने वैसा ही आक्रमण किया । इवान का भी वैसा ही अन्त हुआ जैसा अन्ना का । अलबत्ता बूढ़े मल्लाह और बच्चों का इन अदृश्य आत्माओं ने कुछ नहीं बिगाड़ा । बच्चों को मल्लाह ने ही पाल-पोस कर बड़ा किया ।

अनीति का प्रतिशोध :

जापान की जनश्रुतियों में सत्रहवीं सदी के महाप्रेत सोगोरो की कथा एक ऐतिहासिक तथ्य की तरह सम्मिलित हो गयी हैं और अनाचार बरतने वालों को अक्सर वह घटनाक्रम इसलिये सुनाया जाता रहता है कि अनीति से बाज आयें ।

जापान उन दिनों सामन्ती जागीरों में बँटा हुआ था । राजधानी तो यदो नगरी थी, पर जागीरदार अपने-अपने छोटे ठिकानों से राज-काज चलाते थे । ऐसा ही एक ठिकाना था शिमोसा प्रान्त का साकूरागढ़ । इसका एक सामन्त था--कात्सुके । उसने प्रजा पर अत्यधिक कर लगाये और किसानों पर इतने जुल्म ढाये कि वे त्राहि-त्राहि कर उठे । अन्ततः १३६ गाँवों के किसानों ने मिलकर अपना दुख जागीरदार तक पहुँचाने का निश्चय किया वे सोचते थे शायद छोटे कर्मचारी उन्हें सताते हैं । सामन्त को बात मालूम पड़ेगी तो वह उसकी पुकार सुनेगा । इस विचार से उनके प्रतिनिधि साकूरा चल पड़े । उनका जत्थेदार था ४८ वर्षीय सोगोरो । उन लोगों ने लम्बी अर्जी लिखी और प्रयत्न किया कि उसे जागीरदार को दें । अधिकारियों ने उन्हें भेंट करने की इजाजत नहीं दी और अर्जी को पढ़कर वापिस लौटा दिया । इतने पर भी उनने हिम्मत नहीं छोड़ी और जब वह अपने घर में प्रवेश कर रहा था तो उसकी बग्घी रोककर अर्जी हाथ में थमा ही दी । वहाँ भी उसे रद्द कर दिया गया । अन्य किसानों को तो वापिस लौटा दिया गया पर सोगोरो एक सराय में ठहरा ही रहा और उसने जापान सम्राट तक किसानों की दुख गाथा पहुँचाने का निश्चय किया । संयोगवश सम्राट अपने पूर्वजों की समाधि पर पूजा

करने के लिये वहाँ आने वाले थे । कृषक मुखिया ने अच्छा अवसर समझा और उस अर्जी की नकल सम्राट का भी रास्ता रोककर उनके हाथ में थमा दी ।

परिणाम तो कुछ नहीं निकला पर सामन्त ने सोगोरो को गिरफ्तार करा लिया । उस पर शासकों के विरुद्ध घृष्टता बरतने और षड्यन्त्र करने का मुकदमा चलाया गया । दण्ड में न केवल उसे वरन् उसके सारे परिवार को कत्ल कर देने का आदेश सुनाया गया । जन-समूह की उपस्थिति में ४८ वर्षीय सोगोरो, उसकी ३८ वर्षीय पत्नी मिन, १३ वर्षीय पुत्र जेन्नोसूके, ९ वर्षीय पुत्र सोहैयी, ७ वर्षीय पुत्र किहावी का सिर धड़ से उड़ा दिया गया । दर्शक कलेजा थाम कर इस कुकृत्य को देखते रह गये ।

लाशें दफना दी गयीं पर वातावरण में न जाने कैसा भयंकर उभार आया कि सर्वत्र एक आग और घुटन अनुभव की जाने लगी । शासकों को एक विचित्र भयानकता ने घेर लिया तीसरे ही दिन सुधार घोषणायें हुईं । किसानों पर अत्याचार की जाँच आरम्भ हुई और सकूरागढ़ के समस्त सलाहकार, चार जिलों के शासनाध्यक्ष, बाईस अफसर, सात न्यायाधीश, तीन लेखा परीक्षक बर्खास्त किये गये और किसानों पर से समस्त बढ़े हुए कर तथा लगे हुए प्रतिबन्ध उठा लिये गये ।

ऐसा विचित्र परिवर्तन कैसे हुआ ? सामन्त यकायक कैसे बदल गया ? यह ··I आश्चर्य का विषय था पर जानने वाले कहते थे कि सोगोरो का प्रेत इस बुरी तरह राज्य परिवार के पीछे पड़ा है कि अब उन्हें किसी प्रकार अपनी खैर दिखाई नहीं पड़ती सामन्त कोत्सुके नोसूके और उसकी पत्नी सोते-जागते भयंकर प्रेत छाया को अपने चारों ओर अट्टहास करते हुए देखते और अनुभव करते कि उन्हें अब तो मृत्यु का ग्रास बनना ही पड़ेगा । नंगी तलवार का पहरा बिठाया गया, ओझा-तान्त्रिक बुलाये गये, पर किसी से कुछ रोकथाम न हुई । सामन्त की पत्नी बीमार पड़ी और चारपाई पर से उसकी लाश ही उठी । वह स्वयं विक्षिप्त-सा रहने लगा । एक अवसर पर राजधानी याहीशी में सभी सामन्त सम्राट को वार्षिक भेंट देने के लिये उपस्थित हुए थे । इनमें से साकेयी के साथ कोत्सुके की झड़प हो गयी उसने आव गिना न ताव झट तलवार चला दी और उसकी हत्या कर दी । इसके बाद वह जान बचाकर भागा और अपनी गढ़ी में जा छिपा । सम्राट ने पाँच हजार सैनिक भेजकर उसकी गढ़ी पर कब्जा कर लिया और कबूतर पकड़ने जैसे

जाल में बँधवाकर राजधानी बुलाया । जहाँ उसका सिर उसी तरह उड़ाया गया जैसा कि सोगोरो का उड़ाया गया था ।

लार्ड क्लाइव ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जड़ें स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । अनगिनत व्यक्तियों को उसने इस प्रयोजन हेतु प्रताड़ित किया कई महिलायें उसके कारण विधवायें हुई, कईयों को उसने बिना किसी अपराध के सूली पर लटका दिया । जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ब्रिटिश राज्य के रूप में परिणित हुई, ग्रेट ब्रिटेन की राजसत्ता ने उसे ससम्मान रिटायर कर इंग्लैण्ड की एक काउण्टी में एक रियासत दे दी । अपने साथ विपुल सम्पदा वह जहाज में लेकर आया था । आखिर सोने की चिड़िया कहे जाने वाले देश भारत पर आधिपत्य जमाने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका जो निभाई थी । इंग्लैण्ड आने पर उसने देखा कि कोई रिश्तेदार उसके साथ रहने को तैयार नहीं, जबकि वह असीम सम्पदा का स्वामी था । अकेला वह अपनी रियासत के भव्य भवन में बैठा विगत जीवन पर विचार करता रहता था । ज्यों–ज्यों पिछले जीवन के क्षण फिल्म की तरह उसकी स्मृति पटल पर आने लगे, उसे लगने लगा कि वे सभी जिन्हें उसने सताया था, उसके आस–पास खड़े हैं एवं कभी भी उसे मार डालेंगे । वह अपनी रायफल लेकर बैठने लगा व उन छायाओं पर जो उसे दिखाई पड़ती थीं, गोली चलाता रहता । साथ ही उन्हें गाली भी देता, धमकाता रहता कि वह सबको गोली मार देगा । शंका डायन मनसा भूत की तरह वे गोलियाँ उन कल्पित भूतों पर तो लगती नहीं थीं, खिड़की से बाहर जाकर महल के चारों ओर घूमने वाली एक सड़क पर जाने वाले वाहनों से टकराती थीं । वहाँ एक बोर्ड लगा दिया गया कि इस सड़क पर सावधानी से गाड़ी चलायें, कभी भी गोली आपके विंडस्क्रीन से टकरा सकती है । प्रयास क्लाइव के पास पहुँचकर समझाने के भी हुए, पर हिम्मत किसी की न हुई । एक दिन एक व्यक्ति ने समीप पहुँचकर देखने की कोशिश की तो पाया कि लार्ड क्लाइव तो कभी का अपनी ही रायफल से घोड़ा दबाकर आत्म–हत्या कर चुका है । उसकी लाश व रायफल वहीं पड़ी थी । उसे दफना दिया गया, पर गोलियाँ चलने का सिलसिला समाप्त नहीं हुआ । लोग उसे भुतहा महल मानने लगे । वह बोर्ड अभी भी वहाँ टँगा है । गोलियाँ अभी भी तीर की तरह सनसनाती आती हैं व कारों से टकराती हैं । उस रोड पर तकरीबन यातायात बन्द है । लोगों का कहना है कि लार्ड क्लाइव का भूत ही गोलियाँ चलाता है और उसकी विक्षुब्ध आत्मा वहीं मँडरा रही

है । यह एक ऐसे व्यक्ति की अन्तिम परिणति है जिसने ग्रेट ब्रिटेन के औपनिवेश विस्तार में महत्त्वपूर्ण रोल अदा किया एवं अनगिनत मासूमों की आहें उसे लगीं । ईश्वरीय न्याय व्यवस्था किसी को भी नहीं छोड़ती, न किसी के साथ पक्षपात ही करती है । जो जैसा करता है अदृश्य जगत से उसकी वैसी ही प्रतिक्रिया होती है ।

अन्याय की प्रतिरोधक अदृश्य शक्तियाँ :

अमेरिका के ऐरिजेना प्रान्त में कुछ खाई-खड्डों से भरे सघन वन प्रदेश ऐसे हैं जो न केवल अगम्य एवं डरावने हैं वरन् उनमें रहस्य भरी विशेषतायें भी पायी जाती हैं । यह रहस्य अलौकिकवादियों और वैधानिक शोधकर्त्ताओं के लिये एक पहेली बने हुए हैं ।

कहा जाता है कि उस प्रदेश में या तो आसमान से सोने के धूलि कण बरसते हैं या फिर पहाड़ उसे लावे की तरह उगलते हैं । जो भी हो उस क्षेत्र की पहाड़ियों को सोने के पर्वतों का नाम दिया जाता है और अनेकों उस सम्पदा को सहज ही प्राप्त कर लेने के लालच में उधर जाते भी रहते हैं ।

सम्पत्ति का लोभ जितना आकर्षक है उतना ही वहाँ के प्रहरी प्रेत-पिशाचों के आतंक का भय भी बना रहता है । इस उपलब्धि के लिये अब तक सहस्रों दुस्साहसी उधर गये हैं । इनमें से अधिकाँश को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा है । जो किसी प्रकार जीवित लौट आये हैं उनने सोने के अस्तित्व का तो आँखों देखा विवरण सुनाया है, पर साथ ही यह भी कहा है कि वहाँ अदृश्य आत्माओं का आतंक असाधारण है । वे सोना बटोरने के लालच से जाने वालों का बेतरह पीछा करती हैं और यदि भाग खड़ा न हुआ जाय तो जान लेकर ही छोड़ती हैं ।

भूमिगत विशेषताओं का अन्वेषण करने जो लोग पहुँचे हैं उन्होंने इस क्षेत्र को साइबेरिया की ही तरह रेडियो किरणों से प्रभावित पाया है । रूसी वैज्ञानिक साइबेरिया के कई क्षेत्रों को किसी अज्ञात विकरण से प्रभावित मानते है और कहते हैं कि कभी अन्तरिक्ष या धरती से यहाँ अणु विस्फोट जैसी घटना घटी है । ऐसा किसी उल्कापात से भी हो सकता है । अमेरिकी लोग भी इस क्षेत्र की तुलना लगभग उसी रूसी प्रदेश से ही करते हैं यहाँ एक ६०० फुट गहरा और एक मील लम्बा खड्ड है । समझा जाता है कि यह किसी उल्कापात का परिणाम है । उस क्षेत्र में से किसी उद्देश्य से जाने वाले व्यक्तियों पर संभवतः विद्यमान रेडियो विकरण ही आतंकित करने जैसा प्रभाव उत्पन्न करता होगा और

उस अप्रत्याशित प्रभाव को भूत-पलीतों का आक्रमण मान लिया जाता होगा ।

रहस्यवादियों का मत है कि यूरोपियनों के इस क्षेत्र पर कब्जा करने से पहले आदिवासी लोग रहते थे । इनमें से अपैची कबीला मुख्य था । उसके साथ गोरों की झड़पें होती रहीं और इन मार्ग के कंटकों को हटाने के लिये अधिकर्त्ताओं द्वारा क्रूरतापूर्ण नर-संहार किये जाते रहे । उन मृतकों की आत्मायें ही प्रतिशोध से भरी रहती हैं और जो उधर से गुजरता है उस पर टूट पड़ती हैं ।

कारण क्या है, यह तो अभी ठीक तरह नहीं समझा जा सका, किन्तु सोना बरसने और आतंक छाये रहने की बात सच है । गाथा और किम्बदन्तियाँ तो बहुत दिनों से प्रचलित थीं । वहाँ जाने और कुछ कमा कर लाने की बात बहुतों ने सोची, पर साहस सबसे पहले पाइलीन वीवर ने किया । वह अपने कुछ साथियों के साथ आवश्यक सामान लेकर गया और उस क्षेत्र में डेरा लगाया । दूसरे साथी तो सो गये, पर वीवर को नींद नहीं आई । वह अकेला उठा और कौतूहल में दूर तक चला गया । उस जगह सोने के टुकड़े पाये । ध्यान से देखा तो वे शत-प्रतिशत सोने के थे । उसने बहुत से टुकड़े जमा कर लिये और जितना वजन उठ सकता था उतना साथ लेकर वापिस लौटा । लौटते ही उसकी खुशी आतंक में बदल गयी । डेरा जला हुआ पड़ा था और वहाँ सामान्यतया लोगों की राख भर बनी हुई थी । आँख उठाकर पर्वत की चोटी को देखा तो वहाँ से गिद्धों के झुण्ड की तरह भयानक छायायें उसकी ओर बढ़ती आ रही दिखाई पड़ीं । डर के मारे वह बेहोश हो गया । बहुत समय बाद जब होश आया तो किसी प्रकार भाग चलने का उपाय निकाला और जैसे-तैसे घर वापिस आ गया ।

इस घटना की चर्चा तो बहुत हुई, पर दुबारा उधर जाने का साहस किसी में भी नहीं हुआ । इसके ९६ वर्ष बाद मैक्सिको का एक दुस्साहसी पैरलटा एक मजबूत और साधन सम्पन्न जत्था लेकर उधर गया । उस दल के प्रायः सभी व्यक्ति उसी प्रयास में मर गये केवल एक ही उनमें से जीवित लौटा । उसने सोने की उपस्थिति और मँडराने वाली विपत्ति के जो विवरण सुनाये, उनसे कौतूहल तो बहुत बढ़ा, पर नये जत्थों ने उधर जाने का साहस उत्पन्न नहीं किया ।

छुटपुट रूप में अनेकों व्यक्ति एकाकी अथवा टुकड़ियाँ बनाकर उधर जाते रहे, किन्तु किसी को जान गँवाने के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं

लगा । इसके बाद अमेरिका का ख्याति नामा डाक्टर लवरेन कोमली का अभियान था । वे बहुत तैयारी तथा चर्चा के साथ गये थे । साधनों और जानकारियों की जितनी आवश्यकता थी वह उनने जुटा ली थीं । साथी बीच में से ही लौट आये और मायाविनी छायाओं के आतंक के भयानक विवरण सुनाते रहे । लवरेन ने खोज को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया । वे अकेले ही बढ़ते गये । किन्तु सोने के स्थान पर भयानक पागलपन लेकर वापिस लौटे । कुछ दिन भयानक विक्षिप्तता का शिकार रहकर वे भी मौत के मुँह में चले गये ।

होनोलूलू के व्यवसायियों का एक जत्था स्वर्ण सम्पदा को प्राप्त करने के उद्देश्य से उधर गया और आस्ट्रेलिया के युवक फैंज ने रहस्यों पर से पर्दा उठाने की ठानी । जर्मनी के इन्जीनियरों का एक दल वालेज के नेतृत्व में बड़े दमखम के साथ उधर पहुँचा । वालेज अपने पूर्ववर्ती शोधकर्त्ताओं में अधिक चतुर था । उसने उस क्षेत्र की एक आदिवासी युवती को ललचाकर उसके साथ विवाह कर लिया और उसकी सहायता से स्वर्ण भण्डार के स्थान तथा छायाओं के भेद जानने का प्रयत्न करने लगा । छायाओं को यह पता लग गया । उनने युवती का अपहरण कर लिया और वालेज की जीभ काट ली । इसी कष्ट में उसकी मृत्यु हो गयी ।

उसकी डायरी किसी प्रकार उसके साथियों को मिल गयी । उसके विवरणों से पता चलता है कि उसने स्वर्ण स्रोतों का पता लगा लिया था । भूमिगत कई रहस्यमय स्थान देखे, ढूँढ़े और प्रेतात्माओं को चकमा देकर बच निकलने को सुरंगें भी बनायीं । इतना सब उसकी आदिवासी पत्नी की सहायता से ही सम्भव हो सका, किन्तु दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और अपनी जान गँवा बैठा । यह प्रयत्न सन् १८९१ का है इसके बाद अन्तिम प्रयत्न सन् १९५९ में हुए । स्टेनलोफर्नेल्ड और फरेश नामक दो व्यक्तियों ने संयुक्त प्रयत्न नये सिरे से सोना पाने के लिये किये । उसमें पूर्ववर्ती कठिनाइयों और सफलताओं को पूरी तरह से ध्यान में रखा गया । इस बार की तैयारी अधिक थी । प्रयत्न भी बड़े पैमाने पर और अधिक दिन चले, पर उसका निष्कर्ष इतना ही निकला कि फरेश प्राणों से हाथ धो बैठा और फर्नेल्ड किसी प्रकार जान बचाकर वापिस लौट आया । पल्ले कुछ नहीं पड़ा ।

इस स्वर्ण अभियान में जितनों की लाशें मिल सकीं उनके देखने से एक ही निष्कर्ष निकला कि वे सभी मौतें शरीर से खून चूस लिये जाने

के कारण ही हुई । इनमें से किसी की भी देह में कहीं छेद नहीं पाये गये और न कहीं कपड़ों पर या जमीन पर खून बिखरा हुआ ही पाया गया फिर रक्त चूसने की क्रिया किस प्रकार की गई यह भी उतना ही रहस्यमय बना हुआ है जितना पहले कभी था ।

उक्त घटनायें स्पष्ट करती हैं कि सूक्ष्म जगत में ऐसे किन्हीं अदृश्य प्रहरियों की चौकीदारी भी विद्यमान है, जो न्याय का समर्थन और लूट-खसोट का प्रतिरोध करने के लिये अपनी जागरूकता का परिचय देते रहते हैं । सम्भवतः उस क्षेत्र की सम्पदा की रखवाली वे ही करते हों । यह भी अनुमान लगाने की गुंजायश है कि जिनके स्वत्वों का अपहरण किया गया, जिन्हें निर्दयतापूर्वक मारा गया उनकी आत्मायें प्रतिशोध की भावनायें भरे हुए उस इलाके में निवास करती हों और उनकी रोकथाम से मुफ्त का धन पाने वालों को असफल रहना पड़ता हो । आत्माओं द्वारा न्याय के संरक्षण और अनौचित्य का प्रतिरोध एक तथ्य है । साथ ही प्रकृति व्यवस्था में स्थानीय भूमि पुत्रों के लाभान्वित होने की जो नीति मर्यादा है उसका उल्लंघन ऐसे कारण उत्पन्न कर सकता है जैसे कि अमेरिका में स्वर्ण उपलब्ध करने वालों को भुगतने पड़े हैं ।

दैवी संरक्षण देने वाले अदृश्य सहायक

ब्रह्मविद्या के गूढ़ रहस्यों के प्रतिपादनकर्त्ता एवं थियोसोफी संस्था के संचालकों का कहना है कि उच्च उद्देश्यों की पूर्ति के लिये दैवी शक्तियाँ मनुष्य को कठपुतली की तरह नचातीं और संकटकालीन परिस्थितियों में उनकी रक्षा करती हैं। मेडम ब्लावट्स्की, प्रो० लेडबीटर तथा एनीबीसेन्ट आदि ने अध्यात्म तत्वज्ञान के अन्यान्य पक्षों पर प्रकाश डालते हुए यह प्रतिपादन विशेष रूप से किया है कि उच्च भावना सम्पन्न मनुष्यों का उद्देश्य दिव्य शक्तियाँ तलाशती रहती हैं और जो उनकी कसौटी पर खरे उतरते हैं उनको आगे बढ़ने की प्रेरणा और समय–समय पर समुचित सहायता प्रदान करती रहती हैं। देवत्व का संवर्धन एवं अभिवर्धन उनका प्रधान कार्य है। इस समुदाय को थियोसोफी ने "मास्टर्स" कहा है। उनका तात्पर्य देवात्माओं से है, जो सूक्ष्म शरीरधारी होते हैं, अन्तरिक्ष में विचरण करते हैं, भावनाशील चरित्रवानों की तलाश करते हैं और उन्हें श्रेष्ठता की दिशा में बढ़ाने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। ऐसी आत्माओं का निवास बहुधा हिमालय के उस क्षेत्र में रहता है, जो तिब्बत के समीप पड़ता है। यह अध्यात्म का ध्रुव केन्द्र है। ईश्वरीय इच्छा को जानकर देवात्मा 'मास्टर्स' इसी क्षेत्र में संसार भर की देखभाल करते हैं और धर्मतत्व का–सद्भाव का अभिवर्धन करने के लिये देवदूतों जैसी मध्यवर्ती भूमिका सम्पन्न करते हैं। स्थूल शरीर न होने से वे प्रत्यक्ष क्रियायें तो नहीं कर पाते, पर अपने दिव्य शरीर से पवित्र आत्माओं के माध्यम से वैसा कराते रहते हैं, जो सामयिक लोक कल्याण के लिये आवश्यक है।

थियोसोफी के मूर्धन्य संचालकों के द्वारा कतिपय बड़े और प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे गये हैं, जिनमें "टाक्स ऑन दी पाथ ऑफ आकल्टिज्म" "एट दी फीट ऑफ दी मास्टर्स" और "दी लाइट ऑन दी पाथ" अधिक प्रख्यात हैं।

इन पुस्तकों का प्रधान प्रतिपादन यह है कि यदि मनुष्य अपने आपको पवित्र, प्रखर एवं सत्पात्र बना ले और आत्मोत्कर्ष तथा लोकमंगल

के प्रति अभिरुचि का अभिवर्धन करे तो उसे देवात्माओं का अदृश्य अनुदान एवं वरदान हस्तगत हो सकता है ।

इन मान्यताओं की पुष्टि में सोसाइटी द्वारा प्रकाशित अनेक घटनाओं तथा व्यक्तियों के उद्धरण हैं जिनमें धर्म प्रेमियों ने सत्प्रयोजनों के लिये कदम बढ़ाते हुए किस प्रकार और कितनी अदृश्य सहायतायें प्राप्त कीं ? यह हो सकता है कि इन सहायकों के प्रत्यक्ष दर्शन न हों या विशेष परिस्थितियों में हो भी जाँय, किन्तु वे भीतर ही भीतर यह अनुभव अवश्य करते हैं कि सत्प्रयोजनों में इतनी प्रगति मात्र उनके निजी पुरुषार्थ से नहीं हो रही है वरन् उसकी सफलता के पीछे कोई अदृश्य किन्तु अति समर्थ हाथ भी काम कर रहे हैं ।

परामनोविज्ञान के शोधकर्ताओं ने संसार में ऐसी अनेक घटनायें ढूँढ़ निकाली हैं, जिनमें किसी अशिक्षित के मुँह से आवेश की स्थिति में अपरिचित भाषाओं में उच्चस्तरीय प्रवचन होते सुने गये ।

कई वैज्ञानिकों, कलाकारों ने अपने अनुभव बताते हुए लिखा है कि उनका मार्गदर्शन और प्रशिक्षण किन्हीं दिव्य अदृश्य आत्माओं द्वारा हुआ । थियोसॉफी के जन्मदाताओं में से मैडम ब्लैवेट्स्की और सर ओलिवर लॉज को भी ऐसे अदृश्य सहायकों की आश्चर्यजनक दिव्य सहायतायें प्राप्त होती रही हैं । सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं अध्यात्मवेत्ता लैडबीटर का कथन है कि आपत्तिकालीन स्थिति में उनकी सहायता ७००० हजार मील दूर के अदृश्य सहायकों ने ही की ।

थियोसॉफिकल सोसाइटी की जन्मदात्री मैडम ब्लैवेट्स्की को तो चार वर्ष की आयु से ही देवात्माओं का सहयोग प्राप्त होने लगा था । वह उनकी सहायता से इस प्रकार के कार्य कर डालती थीं, जो साधारण लोगों के वश की बात नहीं होती ।

ब्लैवेट्स्की जीवन के अन्तिम दिनों में अपना महान ग्रन्थ 'सीक्रेट ऑफ डाक्ट्रिन' लिख रही थीं । वह सात बड़े खण्डों में प्रकाशित हुआ है । लेखन कार्य की अधूरी स्थिति में ही उनका अन्त समय आ पहुँचा । वे गहरी बीमारी में फँस गयीं, पर उनके 'मास्टर' ने प्रकट होकर आश्वासन दिया कि उनकी मृत्यु को तब तक रोक रखा जायगा, जब तक वे हाथ में लिये कार्य को पूरा नहीं कर लेतीं । ऐसा हुआ भी ।

थियोसॉफिस्ट अन्वेषणकर्ता सी० डब्लू० लेडबीटर आजीवन परोक्ष जगत पर शोधरत रहे । उनका कथन था कि देवात्मायें निर्दोष बच्चों और

सज्जन लोगों की मुसीबतों में रक्षा करती है तथा कई तरह से लाभ पहुँचाती हैं । एक बार लंदन की हालबर्न सड़क के किनारे एक मकान में भयंकर आग लगी । वह पूरा जल गया, पर उसमें एक बालक पूर्णतः सोता रहा और बच गया । एक दिव्य तेज उसकी रक्षा करता रहा व आग उसे प्रभावित नहीं कर पायी ।

वर्किंघम शायर में बर्नहालवीयो के निकट हुई घटना में इस तरह का दैवी हस्तक्षेप लगभग एक घण्टे तक विद्यमान रहा । एक किसान अपने खेत पर काम कर रहा था । उसके दो छोटे-छोटे बच्चे भी थे, जो पेड़ के नीचे छाया में खेल रहे थे । किसान को ध्यान नहीं रहा और दोनों बच्चे खेलते-खेलते जंगल में दूर तक चले गये और रात्रि के अँधेरे में भटक गये ।

इधर किसान जब घर पहुँचा और बच्चे न दिखाई दिये तो चारों तरफ खोज हुई । परिवार और पड़ौस के अनेकों लोग उस खेत के पास गये, जहाँ बच्चे खोये थे । वहाँ जाकर सब देखते हैं कि दीप-शिखा के आकार का एक अत्यन्त दिव्य नीला प्रकाश बिना किसी माध्यम के जल रहा है, फिर वह प्रकाश सड़क की ओर बढ़ा, यह लोग उसके पीछे अनुसरण करते हुए चले गये । प्रकाश मन्द गति से चलता हुआ, उस जंगल में प्रविष्ट हुआ जहाँ एक वृक्ष के नीचे दोनों बच्चे सकुशल सोये हुए थे । माँ-बाप ने जैसे ही बच्चों को गोदी में उठाया कि प्रकाश अदृश्य हो गया ।

दैवी सहायता ने सदैव बचाया :

"द अनएक्सप्लेण्ड मिस्ट्रीज ऑफ माइण्ड एण्ड स्पेस" में द्वितीय विश्व युद्ध के हीरो विंस्टन चर्चिल, जो कि अवकाश प्राप्ति के बाद पुनः युद्ध में ध्वस्त इंग्लैण्ड का आत्म विश्वास लौटाने के लिये ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बनाये गये थे, के जीवन से जुड़े ऐसे पूर्वाभासों की चर्चा है जो बताते हैं कि दैवी चेतना नहीं चाहती थी कि वे अकाल मृत्यु के शिकार बनें । उन्हें समय-समय पर आसन्न संकटों का पूर्वाभास होता रहा और वे संकटों से बचते रहे ।

एक रात्रि वे १०, डाउनिंग स्ट्रीट जो कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री का अधिकृत निवास स्थान है, में अपने विश्वस्त मंत्रियों के साथ उच्चस्तरीय विचार विमर्श कर रहे थे । उसी समय जर्मनी के बम-वर्षक लन्दन के आकाश में मँडरा रहे थे । सायरन बज रहे थे परन्तु विचार विमर्श जारी था । अकस्मात् चर्चिल उठे, अपने भोजन कक्ष में पहुँचे, जहाँ उनका

रसोइया भोजन बना रहा था । उनने उस रसोइये व उसके सहायक से खाना गर्म तवे पर दूसरे कक्ष में रखकर तुरन्त भोजन कक्ष खाली कर उन्हें बंकरों में जाने को कहा । ३ मिनट बाद ही एक बम गिरा एवं उसी भोजन कक्ष के पिछवाड़े एवं सारे किचन को ध्वस्त कर गया । किन्तु चमत्कारिक रूप से चर्चिल व उसके मंत्री बच गये । बाद में उनने कहा कि मुझे पूर्वाभास हुआ था कि भोजन कक्ष पर बम गिरेगा अतः उन्हें चेतावनी दे आया ।

चर्चिल स्वयं हवाई जहाजों पर हमला करने वाली तोपों, बैटरीज का निरीक्षण करने युद्ध स्थल पर जाया करते थे । एक बार जब वे निरीक्षण करके वापिस आये व कार में बैठ ही रहे थे तो एक क्षण दरवाजे पर खड़े रहे, फिर घूमकर दूसरी ओर से आकर उस दरवाजे की ओर बैठ गये जिधर वह कभी नहीं बैठते थे । ड्राइवर को आश्चर्य तो हुआ पर उसने कुछ कहा नहीं । गाड़ी वापस प्रधानमंत्री निवास की ओर चल दी । एकाएक एक बम विस्फोट हुआ व उनकी गाड़ी का दूसरा हिस्सा जो मुश्किल से उनसे दो फुट दूरी पर था, दूर जाकर गिरा । किसी तरह बिना उल्टे गाड़ी चलती चली गई व लगभग नष्ट हुई उस गाड़ी से उतर कर वे घर में प्रवेश कर गये । बाद में उनने अपनी पत्नी व साथियों को बताया कि मैं जब उस द्वार की ओर से बैठने लगा, जिससे हमेशा बैठता था तो मुझे लगा कि कोई कह रहा है "रुको ! दूसरी ओर जाकर बैठो, यंत्र चालित सा मैं उधर जाकर बैठा जो कि सुरक्षित रहा ।" वे अपनी जान बचाने के लिये हमेशा अपने अन्तःकरण में अवतरित होने वाली ऐसी प्रेरणा को ही श्रेय देते थे । इसे उनने "इनर वाइस"–अन्तः की पुकार का नाम दिया था जो कि पूर्वाभास, दैवी प्रेरणा, अदृश्य सहायता किसी भी नाम से पुकारी जा सकती है । लार्ड डफरिन को भी इसी प्रकार अपनी मृत्यु की पूर्व सूचना एक भयंकर आकार–प्रकार के व्यक्ति को देखकर मिली थी । यह बहुचर्चित घटना, जिसमें वे लिफ्ट दुर्घटना में मरने से बच गये थे, अदृश्य सहायता एवं पूर्वाभास का एक विलक्षण उदाहरण है ।

टीपू सुलतान को अपने समय के सफलतम शासकों में माना जाता रहा है । १८ वीं सदी का यह योद्धा अन्ततः जब श्रीरंगपट्टम में वीरता के साथ संघर्ष करता हुआ सन् १७९९ में युद्ध में मारा गया तो उसके पास से एक डायरी प्राप्त हुई, उससे यह स्पष्ट हुआ कि टीपू को अपनी रणनीति के सम्बन्ध में पूर्वाभास होता था । कभी स्वप्न में, कभी अनायास

बैठे-बैठे यह अन्तःप्रेरणा होती थी कि अब यह कदम उठाना चाहिये । वैसाही होता था । अदृश्य सहायता एवं साथ जुड़े पराक्रम के कारण वह अजेय बना रहा । अपने साथ संभावित विश्वासघात व मृत्यु की संभावना की भी जानकारी उसे मिल गयी थी, जिसे उसने अपनी डायरी में लिख दिया था । दैवी कृतियों को चमत्कार कहा जाता है । वह घोर अँधेरे के बीच न जाने कहाँ से सूर्य का गरमागरम गोला निकाल देते हैं । चिर अभ्यास में आ जाने के कारण वे अजनबी प्रतीत नहीं होते । पर वस्तुतः है तो सही । आकाश में न जाने कहाँ से बादल आ जाते हैं और न जाने किस प्रकार बरस कर सारा जल-जंगल एक कर देते हैं । दैवी चेतना ही इस विश्व वसुन्धरा को विपन्न परिस्थितियों से समय-समय पर उबारती और संतुलन की व्यवस्था बनाती रहती है । कभी-कभी तत्संबंधित चमत्कार भी प्रस्तुत करती है और ऐसे दृश्य उत्पन्न करती है, जिसे देख कर लोगों को उसकी समर्थता पर सहज ही विश्वास हो उठता है ।

घटना १३ अक्टूबर १९१७ की है । पुर्तगाल के कोबिडा इरिया नामक स्थान में तीन बच्चों ने पेड़ पर लटकते एक प्रकाश को देखा । प्रकाश के बीच में एक चन्द्र बदनी देवी मुस्करा रही थी । लड़के डरने लगे तो उस देवी ने कहा--"डरो मत ! मैं स्वर्ग से आयी हूँ । तुम लोग इसी समय आया करो, तो प्रकाश सहित मेरे दर्शन करते रह सकोगे ।"

लड़कों ने बात सब जगह फैला दी दूसरे दिन उस गाँव के आस-पास के लोग सत्तर हजार की संख्या में उस स्वर्ग की देवी के दर्शन करने के लिये एकत्रित हुए । युवती के दर्शन तो न हुए पर लोगों ने बादलों के बीच चाँदी जैसा चमकता हुआ एक दिव्य प्रकाश का गोला देखा । दर्शकों में पढ़े बिना पढ़े, आस्तिक-नास्तिक, मूढ़-तार्किक विद्वान सभी किस्म के लोग थे । सभी ने उस समय वह प्रकाश पुँज देखा और आश्चर्यचकित रह गये कि आखिर यह है क्या ? गोला स्थिर न रहा । उसने कई घेरे बनाकर कलाबाजियाँ खानी शुरू कीं । गोला तश्तरी जैसा हो गया । इससे कई प्रकार की आकृतियाँ बनने लगीं । बहुत समय इसमें इन्द्र धनुष उभरा रहा । इन्द्र धनुष बहुत लम्बा था । अन्तरिक्ष के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक उसकी लम्बाई थी । इस समय हल्की वर्षा हो रही थी । दर्शकों के कपड़े उसमें भीग रहे थे । इतने में प्रकाश के गोले ने एक गरम लहर का चक्कर लगाया और देखते ही देखते सबके

कपड़ों से भाप उठने लगी और वे सब ऐसे सूख गये मानो वर्षा से किसी के कपड़े भीगे ही न हों ।

इस घटना की जानकारी मिलने पर सारे पुर्तगाल में तहलका मच गया । पुर्तगाल के सर्व प्रख्यात दैनिक पत्र मार्से क्यूलों के सम्पादक ने इस घटना का आँखों देखा विवरण छापा और उसे "सूर्य का नृत्य" नाम दिया ।

मनोवैज्ञानिकों में से कुछ ने तुक भिड़ाई कि सत्तर हजार व्यक्ति एक ही कल्पना से आबद्ध थे । फलतः उन्हें वैसा ही स्वरूप प्रतीत हुआ । जिनकी समझ में यह तुक नहीं आई, उनने सीधे-साधे शब्दों में इसे देवी चमत्कार कहते हुए, प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर शान्ति का बोधक इसे बताया । हुआ भी वैसा ही ।

फैलमाउथ (मेन-यू० एस० ए०) के एडविन राबिन्सन नामक व्यक्ति की आँखों की ज्योति ९ वर्ष पूर्व एक सड़क दुर्घटना में चली गयी थी । उसके चिकित्सक विलियम टेलर ने परीक्षणोपरान्त बताया कि अब इसका आना संभव नहीं । संयोगवश १९८२ की जुलाई में वे अकेले घर लौटते समय भयंकर वर्षा वाले तूफान में फँस गये । पेड़ के नीचे शरण पाने के लिये उन्होंने अपनी धातु की छड़ी का प्रयोग किया । तभी जोरों से विद्युत्गर्जन हुआ और उन्हें लगा कि कहीं पास ही बिजली गिरी है । वे धक्का खा कर गिर पड़े, लेकिन पाँच मिनट बाद जब किसी तरह उठे तो पाया कि उनका श्रवण यन्त्र तो बेकाम हो निकल गया, लेकिन वे इसके बिना भी सुन सकते हैं । आँखों से उन्हें सब कुछ दिखाई भी दे रहा है । प्रसन्न मन वे वापिस घर लौटे । चिकित्सकों के अनुसार यह विज्ञान की समझ में न आ पाने वाले वैचित्र्यपूर्ण संयोगों में से एक है, जिसका कोई समाधान नहीं दिया जा सकता ।

मैरी गैलेन्ट प्रान्त के फ्रांसीसी गवर्नर की तीन वर्षीय पुत्री एक समुद्री यात्रा पर अपने पिता के साथ थी । रास्ते में वह बीमार पड़ी और मर गयी । उसकी लाश बोरे में सींकर बन्द कर दी गई ताकि उसे जल में उपयुक्त स्थान पर डाला जा सके । कुछ समय उपरान्त देखा गया कि जहाज में पालतू बिल्ली उस लाश के पास चक्कर काट रही है । आमतौर से बिल्ली लाश से दूर रहती है । सन्देह हुआ कि कहीं बच्ची जीवित तो नहीं है । २४ घण्टे बीत चुके थे, फिर भी लाश का बोरा खोला गया, तो देखा कि लड़की की हल्की-हल्की साँसें चल रही हैं । उसको उपचार मिला और वह ठीक हो गयी । बड़ी होने पर उसका

विवाह फ्रांस के राजा लुई चौदहवें के साथ हुआ और वह ८४ वर्ष की आयु तक जीवित रही ।

सन् १८२५ की घटना है । पश्चिमी जर्मनी के वाइक कस्बे के समुद्र तट पर भयानक समुद्री तूफान आया । असंख्यों परिवार उसमें डूब गये । फिर भी पालने से बँधे दो बच्चे जीवित अवस्था में किनारे पर पड़े पाये गये । किसी माता-पिता ने इनके तैरने की सुविधा सोचकर पालने से बाँध दिया होगा । वे डूबे नहीं, किनारे आ लगे । उन्हें समुद्री जहाज के मालिक ने उठाया और पाल लिया । बड़े होने पर वे उस पालने वाले के उत्तराधिकारी बने और जहाजों के मालिक कहलाये । जिन्दगी उन्होंने समुद्र में ही बिताई और अन्ततः किसी समुद्री तूफान में फँसकर जहाज समेत समुद्र के गर्भ में ही समा गये ।

कन्सास के आर्थर स्टिवैल ने एक लम्बा रेल मार्ग बनाने की जिम्मेदारी ली थी । काम ठीक तरह आरंभ भी नहीं हो पाया था कि एक अप्रत्याशित झंझट आ खड़ा हुआ । इस जमीन पर एक व्यक्ति ने अपने अधिकार का दावा किया और कोर्ट से निषेधाज्ञा निकलवाकर काम रुकवा दिया । बहुत समय तक इस अवरोध के बाद आर्थर ने सपना देखा कि जमीन का असली मालिक कोई कर्से नामक व्यक्ति है । खोज की गयी, कर्से मर चुका था । उसके उत्तराधिकारी भी इस जमीन के सम्बन्ध में अनभिज्ञ थे । पर जब सपने के हवाले से उसने जबरन कागजों की खोजबीन कराई तो ऐसे प्रमाण मिल गये जिनसे वे लोग ही जमीन के मालिक सिद्ध होते थे । अन्ततः उन लोगों से समझौता करके रेलवे लाइन का काम फिर चालू किया गया और यथासमय पूरा भी हो गया । यह काम पूरा होने पर उन्हें करोड़ों का लाभ हुआ ।

अपनी पुस्तक "द रूट्स ऑफ काइन्सीडेन्स" में कोस्लर ने स्पष्ट लिखा है कि हम निस्संदेह संयोगपरक चमत्कारों से घिरे हैं, जिनके अस्तित्व की अब तक हम उपेक्षा करते रहे हैं । यही कारण है कि इन्हें अन्धविश्वास से अधिक कुछ माना नहीं गया है । यह रहस्य मनुष्य सदियों तक नहीं समझ पाया कि सूक्ष्म जगत कितना अद्भुत, विलक्षण है, ऐसी कितनी ही घटनायें इसकी साक्षी हैं ।

प्रसिद्ध लेखक रिचर्ड बॉक १९६६ में अमेरिका के मध्य पश्चिम क्षेत्र में दो फलक वाले एक विमान में यात्रा कर रहे थे । यह विमान दुर्लभ प्रकार का था क्योंकि १९२९ में निर्मित डेट्राइट--पी-२ ए टाइप के विमान केवल आठ ही बने थे व इतने ही विश्व में थे । विस्कॉन्सिन स्थित

पाथीरो नामक स्थान में रिचर्ड ने यह विमान अपने पायलट साथी मित्र को चलाने के लिये दिया। विमान उतारते समय मित्र से थोड़ी भूल हो गयी और विमान क्षतिग्रस्त हो गया। "नथिंग बाइचान्स" (कुछ भी अनायास नहीं) नामक पुस्तक में रिचर्ड बॉक स्वयं लिखते हैं कि "हमने दबाव को रोकने वाले पुर्जे को छोड़कर शेष हर पुर्जे की मरम्मत कर दी थी। इस पुर्जे की मरम्मत इसलिये न हो सकी कि उसके दुर्लभ होने से वह भाग कहीं भी मिलना सम्भव न था। तभी एक व्यक्ति आया जिसने स्वयं ही उत्सुकतावश उनकी परेशानी पूछी। संयोगवश उसकी विमानशाला में उस विमान के उपयुक्त ४० वर्ष पुराना पुर्जा मिल गया। यह एक संयोग ही था कि उस अपरिचित इलाके में ठीक वही पुर्जा मिल गया। जिसे खोज कर हम हार गये थे।

न्यूजीलैण्ड के कुक जलडमरूमध्य में दो शौकिया नाविक महिलायें अपना सप्ताहान्त बिता रही थीं। इसी बीच उनकी नाव एक समुद्री चक्रवात में फँसकर उलट गयी। दोनों महिलायें कुछ दूर तक तैरीं पर किनारा मीलों दूर था, नजदीक कोई साधन नहीं। इसी बीच एक मृत ह्वेल मछली की लाश पानी में तैरती हुई उनके समीप लहरों के साथ आयी। वे उस पर चढ़कर उसे नाव की तरह खेती हुई किनारे पर आ गयीं और सकुशल घर पहुँच गयीं।

अदृश्य और उदार आत्मायें कितनी ही बार स्थूल सहायता भी करती हैं। द्वितीय महायुद्ध के समय मोन्स की लड़ाई में ब्रिटिश सेनाओं की बुरी तरह हार हो गयी, मात्र ५०० सैनिक बचे। वे भी बुरी तरह हौसला पस्त हो चुके थे। दूसरी ओर जर्मनों की १० हजार की संख्या वाली सेना जिसकी कोई समानता न थी। तभी ऐसे आड़े समय में ब्रिटिश सेनाधिकारी को अपने स्वर्गीय सेना नायक सेन्ट जार्ज का स्मरण हो आया। उसने अपने सभी साथियों सहित इस महान सेना नायक का ऐसी परिस्थिति में भावनापूर्वक एक साथ स्मरण किया। सभी सैनिक तन्मय स्मरण में व्यस्त थे कि अचानक एक बिजली सी कौंधी। पाँच सौ सैनिकों को पीछे शुभ्र आभा प्रकट होती दिखाई दी कि कुछ ही क्षणों में रणभूमि में सभी जर्मन सैनिक खेत हो गये। न गोला, न बारूद, न अस्त्र, न शस्त्र! फिर सैनिक कैसे मरे? यह आज तक अचरज बना हुआ है।

दैवी सत्ता के पार्षद–अग्रदूत

भगवान निराकार होने से वे कार्य नहीं कर पाते, जिनमें ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय की आवश्यकता होती है, ऐसे कार्य वे अपने पार्षदों से कराते हैं। "पार्षद" का अर्थ है–"निकटवर्ती"। जो ईश्वर की दिव्य विभूतियों को जितनी अधिक मात्रा में अपने भीतर धारण कर पाते हैं वे उसी मात्रा में भगवान के निकटवर्ती या कृपा पात्र माने जाते हैं। उन्हें संसार का संतुलन बनाये रखने वाले कार्य करने का निर्देशन दिया जाता है और वे उसे पूरा कर भी दिखाते हैं। इस पराक्रम में दैवी शक्ति उनका साथ भी देती है। प्रतीत ऐसा होता है कि यह व्यक्ति विशेष की क्षमता का चमत्कार है। सांसारिक प्रयोजनों में तो व्यक्ति की प्रतिभा ही काम करती है, पर उत्कृष्टतावादी, आदर्शवादी प्रयोजनों में सामान्य व्यक्ति अपनी लोलुपवृत्ति के कारण न तो रस ले पाते हैं और न उसमें मन ही लगता है। फिर जोखिम उठाने की बात तो बने ही कैसे ? जो असंख्यों के लिये अनुकरणीय, अभिनन्दनीय कार्य करते हैं, उन्हें उतना कुछ सांसारिक जीवन या परिकर नहीं करने देता, उनमें विघ्न ही उपस्थित करता है। ऋषिकल्प आत्मा ही महापुरुषों की भूमिका निभाती हैं और वे ही इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णिम पदचिन्ह छोड़ जाती हैं।

भारतभूमि हमेशा से युग परिवर्तन की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आयी है। समय–समय पर पूर्वानुमानों एवं दिव्य दृष्टि के आधार पर अपना मत व्यक्त करने वाले देश–विदेश के मनीषियों ने कहा है कि जब–जब भी दैवी विपत्तियाँ बढ़ी हैं एवं मानव आसुरी आचरण में प्रवृत्त हुआ है, इस देवभूमि से उद्भूत दिव्यात्माओं ने ही युग परिवर्तन की महती भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता संग्राम में जितना श्रेय प्रत्यक्ष क्रियाशील क्रान्तिकारियों एवं स्वाधीनता सैनिकों को दिया जाता है, उससे अधिक इन दिव्य दृष्टि सम्पन्न व्यक्तियों ने उन महापुरुषों को दिया है, जिन्होंने वातावरण बनाने हेतु तप–साधना की, परोक्ष में क्रियाशील रहे एवं युग परिवर्तन की प्रचण्ड आँधियां ला सकने में समर्थ हुए। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द से लेकर रामतीर्थ, योगीराज अरविन्द, महर्षि रमन आदि का

नाम इसी संदर्भ में लिया जाता है जिनका नाम इस सूची में नहीं है, वे सदा से उत्तराखण्ड की कन्दराओं में तप साधना में निरत हैं एवं उस सारे लीला संदोह को देख रहे हैं जो प्रत्यक्ष में दृश्यमान है, परोक्ष में घटने वाला है।

मनुष्य की शक्ति सीमित है। उसका शरीरबल एवं बुद्धिबल नगण्य है। साधन और सहयोग भी एक सीमा तक ही वह अर्जित कर सकता है। आकांक्षाओं और संकल्पों की पूर्ति बहुत करके परिस्थितियों पर निर्भर हैं। यदि प्रतिकूलताओं का प्रवाह चल पड़े तो बनते काम बिगड़ सकते हैं। इसके विपरीत ऐसा भी हो सकता है कि राई को पर्वत होने का अवसर मिले। "मूक होहिं वाचाल, पंगु चढ़हिं गिरिवर गहन" वाली रामायण की उक्ति प्रत्यक्ष प्रकट होने लगे और दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दे।

जिनने कठपुतली का काम देखा है वे जानते हैं कि बाजीगर पर्दे के पीछे बैठा हुआ अपनी उँगलियों के साथ बँधे हुए तारों को इधर-उधर हिलाता रहता है और मंच पर एक आकर्षक अभिनय लकड़ी के टुकड़ों द्वारा सम्पन्न होने लगता है। हवा के झोंके तिनके एवं धूलि कणों को आकाश में उड़ा ले जाते हैं पानी के प्रवाह में पड़कर झंखाड़ और कचरे के गट्ठर नदी-नालों को पार करते हुए समुद्र तक की लम्बी यात्रा कर लेते हैं। पिछले दिनों यही हुआ है। ईश्वरीय इच्छा व्यवस्था को कार्यान्वित करने में कितनी ही देवात्माओं-दिव्य विभूतियों को कार्य क्षेत्र में उतरना पड़ा है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दिनों महर्षि रमण का मौन तप चलता रहा। इसके अतिरिक्त भी हिमालय में अनेकों उच्चस्तरीय आत्माओं की विशिष्ट तपश्चर्यायें इसीलिये चलीं। राजनेताओं द्वारा संचालित आन्दोलनों को सफल बनाने में इस अदृश्यसूत्र संचालन का कितना बड़ा योगदान रहा इसका स्थूल दृष्टि से अनुमान न लग सकेगा किन्तु सूक्ष्मदर्शी तथ्यान्वेषी उन रहस्यों पर पूरी तरह विश्वास करते हैं। अदृश्य वातावरण में उपयोगी प्रवाह उत्पन्न करने के लिये पिछले दिनों योगीराज अरविन्द ने भी बड़ी असाधारण भूमिका निबाही। उनके कार्यकाल में भारत ने इतने अधिक महामानव उत्पन्न किये जिनकी तुलना इतिहास के किसी भी काल में नहीं देखी गई। स्वराज्य मिलने का यों प्रत्यक्ष श्रेय नेताओं और स्वाधीनता सैनिकों को जाता है, फिर भी

सूक्ष्मदर्शी जानते हैं कि इस संदर्भ में घटित हुआ घटनाक्रम असाधारण एवं आश्चर्यजनक था । मात्र प्रयासों का प्रतिफल ही वह नहीं था वरन् अदृश्य जगत में भी कठपुतलियों को हिलाने और नाट्य को आकर्षक बनाने में वे बहुत कुछ करते रहे । उपरोक्त तपस्वियों ने माहौल इतना गरम किया कि ग्रीष्म ऋतु में उठने वाले चक्रवातों की तरह चकित करने वाली उथल-पुथल का दृश्य दीखने लगा ।

कुछ ही दशाब्दियों में न केवल भारत का वरन् समूचे एशिया का कायाकल्प हो गया । इतने बड़े परिवर्तन की सहज आशा न थी । गाँधी काल अद्भुत था । दो हजार वर्षों की पराधीनता भोगते-भोगते मनुष्य का रोम-रोम गुलाम हो गया था । अँग्रेजों के सात समुद्र पार तक फैले शासन का आतंक ऐसा था जिसमें किसी के हाथ-पाँव चलना तो दूर मुँह तक नहीं खुलता था, पर वातावरण ऐसा बदला कि गाँधी की आँधी पत्तों व धूलि कणों को उड़ाकर आसमान तक ले गयी और परिस्थितियाँ इतनी बदलीं कि अँग्रेजों को पैर जमाये रहना मुश्किल हो गया । उनने सलाह मशविरा करके सत्ता हस्तांतरित कर दी ।

रावण का आतंक पूरी तरह छाया हुआ था । सीता को वापस लाने के युद्ध में एक भी राजा सहयोगी न बना । सबको अपनी-अपनी जान प्यारी थी । उस जमाने में रामराज्य की स्थापना का माहौल बना । न केवल सोने की लंका वाला दसशीश, बीस भुजा वाला रावण मरा उसके साथ एक लाख पूत सवा लाख नाती वाला कुटुम्ब भी सफाचट हो गया । उन दिनों कोई आशा नहीं करता था कि १४ वर्ष के वनवास काल में इतनी बड़ी उथल-पुथल संभव हो जायगी ।

यह वातावरण की बात हुई । व्यक्तियों के पुरुषार्थ का प्रसंग भी देखने योग्य है । तान्त्रिक अनाचार के विरुद्ध जहाँ किसी की भी जीभ नहीं खुलती थी, वहाँ देखते-देखते लाखों चीवरधारी भिक्षु-भिक्षुणी मैदान में कूद पड़े और एशिया समेत विश्व में धर्म चक्र प्रवर्तन की असम्भव प्रक्रिया को संभव कर दिखाने लगे । यह आँधी-तूफान का काम था । उपदेश सुनाने भर से इतने लोग किस प्रकार इतना बदल जाते और जो कार्य जीवन भर में कभी सुना-सीखा तक नहीं था उसे कैसे कर दिखाते । सत्याग्रहियों की सेना में लाखों निहत्थे लोग जेल जाने, घर बर्बाद करने, फाँसी पर चढ़ने के लिये तैयार हो गये । इन्हें कहीं फौजी ट्रेनिंग नहीं मिली थी । जिन्हें वर्षों खर्चीली ट्रेनिंग मिलती है, उनमें से भी बहुतेरे पीठ दिखाकर भागते देखे गये हैं, पर गाँधी के

सत्याग्रही न जाने कहाँ से रातों-रात ढलकर आ गये और ऐसा कमाल दिखाते रहे, जिससे सारी दुनियाँ दाँतों तले उँगली दबाये रह गयी। यह व्यक्ति निर्माण है। गोवर्धन पर्वत उठाने वाले इतने वजन के नीचे दबकर मर सकते थे, पर हिम्मत का कमाल देखा जाय कि गोवर्धन उठाना था तो उठा कर ही दम लिया। लंका युद्ध तो छिड़ गया, पर सैनिक कहाँ से आयें। दैत्य कुम्भकरण के मुँह का चारा बनने की हिम्मत किस समझदार में उत्पन्न हो। रीछ-वानर रातों-रात दौड़ते चले आये और निहत्थी स्थिति में अस्त्र-शस्त्रों वाले राक्षसों से भिड़ गये। रीछों ने इंजीनियरों की शानदार भूमिका निभा कर रख दी। इसे कहते हैं-दैवी चमत्कार।

इस प्रक्रिया में पराक्रम और साधनों का अगला चरण है। अंगुलिमाल जैसे दुर्दांत दस्यु ने उस दिन बुद्ध का सिर उतार लेने की योजना बनायी थी। निहत्थे साधु के सामने पहुँचा तो शक्तिहीन हो गया। थर-थर काँपने लगा और शत्रुता छोड़कर मित्रता के बंधन में बँध गया। साधनों की बारी आयी तो झोली पसार कर ही काम चल गया। अम्बपाली का तीस लाख का खजाना एक ही दिन में मिला और ढेरों संघाराम वाला विहार बनकर तैयार हो गया। काम बढ़ा तो बड़े साधनों की आवश्यकता पड़ी। नालंदा विश्वविद्यालय के संचालन का काम अशोक ने और तक्षशिला का उत्तरदायित्व हर्षवर्धन ने अपने कंधे पर उठा लिया। चीन के समूचे क्षेत्र में अवरोधों का ढाँचा सहयोगियों में बदल गया। गाँधी का युद्ध, राणा प्रताप के युद्ध से बड़ा था। तब एक भामाशाह निकलकर आये थे। अब जमुनालाल बजाजों की भीड़ लग गयी। पराक्रमियों में क्रान्तिकारियों की गदर पार्टियाँ देश-विदेश में तहलका मचाने लगीं। सुभाषचन्द्र बोस, भगतसिंह और चन्द्रशेखरों की कमी न रही। धन के बिना, साधनों के बिना वह काम रुका कहाँ ? विनोबा जैसे अकिंचन पचास लाख एकड़ जमीन माँग लाये। गाँधी स्मारक निधि पर एक करोड़ और कस्तूरबा निधि पर साठ लाख रुपया बरस पड़ा। खादी उद्योग सर्वोदय जैसी गाँधी द्वारा आरम्भ की गयी अतिरिक्त प्रवृत्तियों में अरबों रुपया लग गया। यदि समूचे स्वतंत्रता संग्राम का कोई अनुमान लगाये तो प्रतीत होगा कि उसमें न साधन कम लगे और न पराक्रम में न्यूनता पड़ी। राम इधर से नंगे पैरों वनवास गये थे, उधर से पुष्पक विमान में बैठकर वापस आये। कृष्ण वन में गौयें चराते थे, पर पीछे उनके साथी द्वारिकापुरी वासी और वे स्वयं द्वारिकाधीश कहलाये।

पराक्रम तो उन्हें भी बचपन से ही करना पड़ा ।

यह इतिहास की दिव्य चेतना द्वारा संचालित कुछेक प्रतिभाओं की चर्चा है, जिनने वातावरण बदला, सुयोग्य सहकर्मियों की मण्डलियाँ जुटायीं और पराक्रम तथा साधनों की आवश्यकता पड़ी तो दौड़ती चली आयीं। जमाने की प्रतिकूलता एक ओर दिव्य प्रवाह और एक व्यक्ति का पौरुष एक ओर । घनघोर अँधेरे में प्रकाश उत्पन्न करने वालों को अध्यात्मवादी कहा जा सकता है । जिनने अपनी अथवा दूसरों की आत्म शक्ति के सहारे समूचे समय को बदल डालने जैसे चमत्कार दिखाये, उनके संबंध में कहा जा सकता है कि उनमें आत्म शक्ति थी और उनने भगवत्प्रेरणा के सहारे ऐसे काम कर दिखाये जो परमात्म शक्ति की गरिमा बताते और असंतुलन को संतुलन में बदलने की उसकी वचन बद्धता को याद दिलाते हैं ।

ऐसे-ऐसे असंख्यों उदाहरणों का इतिहास पुराणों में वर्णन है । दैवी अनुकम्पा अन्धविश्वास नहीं है । दैवी प्रकोपों का कुचक्र जब मानवी प्रगति प्रयत्नों को मटियामेट कर सकता है तो दैवी अनुग्रह से अनुकूलता क्यों उत्पन्न न होगी ? बाढ़, भूकम्प, महामारी, अतिवृष्टि, इतिभीति आदि विनाशकारी घटनाक्रम दैवी प्रकोप से ही उत्पन्न होते हैं । उसी क्षेत्र की अनुकम्पा से समृद्धि, प्रगति और शान्ति के द्वार भी खुल सकते हैं ।

दैवी प्रकोप या अनुग्रह अकारण ही नहीं बरसते । सृष्टि की सुव्यवस्था में व्यतिरेक उत्पन्न करने पर सुयोग सँजोने में व्यक्ति की बहुत बड़ी भूमिका होती है । कुकृत्य ही अदृश्य वातावरण को दूषित करते और प्रकृति प्रकोपों को टूट पड़ने के लिये आमन्त्रित करते हैं । इसके साथ ही यह भी सुनिश्चित तथ्य है कि ऋषि स्तर के व्यक्ति जब उच्च प्रयोजनों के निमित्त तपश्चर्या करते और वातावरण में उपयोगी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं तो दैवी अनुकम्पा का भी सुयोग बनता है । देवता न किसी पर कुपित होते हैं न दयालु । स्थिति का पर्यवेक्षण करते हुए वे तदनुरूप दण्ड-पुरस्कार का तालमेल बिठाते रहते हैं । जिस प्रकार दुरात्माओं का बाहुल्य संसार में विपत्ति बरसाने का सरंजाम जुटाता है उसी प्रकार देव मानवों की तपश्चर्या प्रत्यक्ष और परोक्ष क्षेत्र के सुयोग जुटाती है । सन्त अपनी सेवा-साधना में जहाँ धर्म धारणा और पुण्य प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं उनकी विशिष्ट साधनाओं से अदृश्य जगत का परिशोधन भी होता है । यही कारण है कि अध्यात्म वेत्ता लोक

साधना और अध्यात्म साधना को समान महत्त्व देते हैं । दोनों के लिये समान प्रयत्न करते हैं ।

दैवी चेतना के अग्रदूत : महामानव :

सन्त कबीर का जन्म पिछड़े लोगों को ऊँचा उठाने और साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने, पाखण्डों का खण्डन करने के निमित्त हुआ । यह कार्य वे जीवन काल में एवं तदुपरान्त सूक्ष्म शरीर से भी करते रहे । अपने प्रचण्ड आत्मबल के दबाव में असंख्यों के विचार बदले । साथ ही जो बलिष्ठ आत्मायें सम्पर्क म आयीं, उन्हें अपने वर्चस्व से अधिक ऊँचा उछालते रहे । सुदूर क्षेत्रों में धर्म प्रचार की तीर्थयात्रा भी करते रहे ।

कट्टर मुसलमानों को यह बुरा लगा कि मुस्लिम जुलाहे का लड़का हिन्दू धर्म के अनुरूप प्रचार करे । उनकी सल्तनत होने के कारण यह उन्हें राजद्रोह जैसा कार्य लगा । जब रोकथाम अपने स्तर पर कारगर न हुई तो उन दिनों के बादशाह सिकन्दर लोदी के कान भरे । कबीर को मृत्यु दण्ड सुनाया गया । लोहे की हथकड़ी बेड़ी से कसकर गंगा के गहरे भाग में डुबो देने का आदेश हुआ । कबीर अपनी कार्य पद्धति बदलने को राजी न हुए, डूबने को तैयार हो गये ।

कबीर डूबे पर मरे नहीं । चमत्कार यह हुआ कि अन्दर जाते ही उनकी जंजीरें स्वतः टूट गयीं और वे बहते-बहते किनारे जा लगे । इस प्रकार जीवित निकलने के बाद कबीर ने एक पद गाया--

> गंगा माता गहरि गंभीर, पटके कबीर बाँधि जंजीर ।
> लहरनि तोड़ीं सब जंजीर, बैठि किनारे हँसे कबीर ।।

बादशाह ने यह चमत्कार सुना तो वह चकित रह गया । क्षमा माँगी और अपना सर्व धर्म प्रचार करने की छूट दे दी ।

मरने के बाद कबीर की आत्मा चैतन्य महाप्रभु, जगद् बन्धु, एकनाथ, सन्त दादू जैसे लोगों के घनिष्ठ सम्पर्क में रही । इन लोगों ने भारत में फैले जातिगत ऊँच-नीच के कलंक को धोने के प्रयत्न किये । इनके अतिरिक्त उस मध्यान्तर काल में अनेकों समाज सुधारक, भक्तजन ऐसे जन्मे जिनने अन्धकार युग के अन्धविश्वास को दूर करने में असाधारण प्रयत्न किये और वातावरण बदला । इन कार्यों के पीछे कबीर की शाश्वत आत्मा की सूक्ष्म प्रेरणा का परोक्ष विशिष्ट सहयोग था ।

दृश्य एवं अदृश्य जगत के मध्य सम्पर्क एवं आदान-प्रदान के ऐसे कई प्रसंग कई विख्यात विभूतियों से जुड़े हुए हैं जिनसे उनके विवादास्पद होने

की गुंजायश रह ही नहीं जाती । इन सभी से यह स्पष्ट होता है कि इन व्यक्तियों ने देव स्तर की आत्माओं का सहयोग प्राप्त कर उनसे लाभ उठाया ।

महर्षि अरविन्द के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि वे जब अलीपुर जेल में थे तब दो सप्ताह तक लगातार विवेकानन्द की आत्मा ने उनसे सम्पर्क किया था । स्वयं अरविन्द ने लिखा है "जेल में मुझे दो सप्ताह तक कई बार विवेकानन्द की आत्मा उद्घोषित करती रही और मुझे उनकी उपस्थिति का भान होता रहा । उस उद्बोधन से मुझे आध्यात्मिक अनुभूति हुई । भावी साधनाक्रम के संबंध हेतु महत्वपूर्ण निर्देश भी मिले ।"

सन् १९०१ में जब अरविन्द प्रेतात्माओं के सम्पर्क का अभ्यास किया करते थे, इसमें एक दिन रामकृष्ण परमहंस की आत्मा ने भी अरविन्द को समष्टि की साधना हेतु कुछ महत्वपूर्ण निर्देश दिये थे । अरविन्द जिन दिनों बड़ौदा में रह रहे थे उन दिनों का एक अनुभव बताते हुए उन्होंने लिखा है कि एक बार जब वे कैम्प रोड शहर की ओर जा रहे थे तब एक दुर्घटना से किसी ज्योति पुरुष ने उन्हें बचाया ।

श्री अरविन्द के जीवन चरित्र के श्री माँ प्रकरण में इस प्रकार की घटनाओं का विवरण देते हुए लिखा गया है, वे "(श्रीमाँ) जब छोटी सी बालिका थीं, तब उन्हें बराबर भान होता रहता था कि उनके पीछे कोई अति मानवी शक्ति है जो जब तब उनके शरीर में प्रवेश कर जाती है और तब वे अलौकिक कार्य किया करतीं ।" इस प्रकरण में उस दिव्य शक्ति द्वारा श्रीमाँ के कई काम सम्पन्न करने की अनेक घटनायें वर्णित हैं । पाण्डिचेरी आकर रहने व अरविन्द से सम्पर्क करने का निर्देश भी उन्हें एक अदृश्य ज्योति सत्ता से ही मिला था ।

देवात्माओं को ईश्वर का सन्देशवाहक कहा जाता है । मनुष्य के बाद की श्रेणी देव योनि में ही पहुँचने की है । चौरासी लाख योनियाँ तो शरीरधारियों की हैं । वे स्थूल जगत में रहती हैं और आँखों से देखी जा सकती हैं । लेकिन दिव्य आत्माओं का शरीर दिव्य होने के कारण उन्हें चर्म चक्षुओं से नहीं देखा जा सकता । देवताओं की तीन श्रेणियाँ गिनी गयी हैं । (१) कामदेव (२) रूप देव (३) अरूप देव । देवताओं के मार्ग दर्शक एवं पृथ्वी तत्व पर नियंत्रण रखने वाले चतुर राजाओं यानी देव राजर्सों का उल्लेख विश्व के विभिन्न धर्मग्रन्थों में प्रायः होता आया है । ब्लैवट्स्की की सुप्रसिद्ध एवं लोकप्रिय पुस्तक "सीक्रेट

डौक्ट्राइन्स" में इन देव राजसों की संख्या सात अंकित की गयी है । हिन्दू धर्म में सप्त ऋषियों की भूमिका इसी को पूरा करने की रही है । देवात्मायें लोकसेवा, पुण्य-परमार्थ और नेतृत्व उत्तरदायित्व सँभालती हैं । उनसे परिचालित मनुष्य मन्त्र मोहित की तरह उस अभिनव प्रयोजन में इस प्रकार जुटे रहते हैं मानो वह उसकी निजी प्रतिष्ठा का प्रश्न हो । उनके द्वारा प्रस्तुत आदर्श और पौरुष उस दिव्य अनुदान की ही फलश्रुति होती है ।

चन्द्रगुप्त, चाणक्य, शिवाजी समर्थ आदि के भी प्रसंग ऐसे ही हैं जिनमें इस तरह का कर्तृत्व प्रकट हुआ जैसा कि कर्त्ताओं का न पौरुष था, न मन और न अभ्यास । अनुदान भी कई बार निजी उपार्जन जैसा ही काम करते हैं । भामाशाह का दिया हुआ धन राणाप्रताप के डगमगाते हुए हौसले को बुलंद करने में सहायक सिद्ध हुआ । अध्यात्म क्षेत्र में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनमें समर्थ शक्तियों ने सत्पात्रों को कहीं से कहीं पहुँचा दिया ।

अनगढ़ युवक नरेन्द्र को स्वामी विवेकानन्द की वह भूमिका निभानी पड़ी, जिसके न वे इच्छुक थे और न योग्य । किन्तु रामकृष्ण का अनुग्रह उन्हें इस योग्य बना सका, जिसके कारण उन्हें भारतीय संस्कृति का युगदूत कहा जाता है । उन्होंने लाखों करोड़ों के अन्तरंग में अश्रद्धा के स्थान पर श्रद्धा का बीजारोपण कर दिया ।

विवेकानन्द ने अपने अनुभवों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि "जब मैं बोलने खड़ा होता था तो आरम्भ में चिन्ता रहती थी कि क्या कुछ कह सकूँगा । ज्यों ही बोलना आरंभ करता तो प्रतीत होता कि मस्तिष्क पर किसी दिव्य लोक से ज्ञान वर्षण हो रहा है । वाणी जो बोलती थी, वह भी ऐसा होता था मानो जीभ किसी की है और वाणी किसी की ।"

रामकृष्ण परमहंस के न रहने पर उनकी धर्मपत्नी शारदामणि की भी क्षमता एवं प्रकृति ऐसी हो गयी थी जिससे भक्तजनों को उनकी अनुपस्थिति अखरी नहीं ।

परमहंस ने स्थूल शरीर से कम और सूक्ष्म शरीर से अधिक काम किया । उनने बंगाल की अनेक प्रतिभाओं को चमकाया और उनसे बड़े महत्त्व के काम कराये । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के माध्यम से विधवा विवाह के प्रचलन तथा सती प्रथा बन्द कराने का, विधवाओं को नया जीवन देने का कार्य कराया ।

केशवचन्द्र का ब्रह्म समाज भी उन्हीं के परोक्ष सहयोग से फूला-फला । उसके अन्तर्गत आत्म-कल्याण और समाज सुधार की अनेक प्रक्रियायें सम्पन्न होती रहीं ।

गुजरात वीरपुर के जलाराम बापा से उनका सूक्ष्म सम्बन्ध था । उन्हें भी उन्होंने उच्चकोटि का सन्त बनाया । पति-पत्नी मिलकर वे भी वही कार्य करते थे जो परमहंस जी ने किया । बापा की परीक्षा लेने भगवान स्वयं उनके घर आये थे और अक्षय अन्न भण्डार की झोली उन्हें उपहार में दे गये थे । जिस माध्यम से जलाराम के सामने से भी अधिक बढ़ा-चढ़ा अन्न क्षेत्र वीरपुर आश्रम में चलता रहता है ।

परमहंस जी अपने अन्तरंग सहचरों को बताया करते थे कि इस समय सच्ची भक्ति भावना को फलती-फूलती देखने के लिये गुजरात की भूमि सबसे अधिक उर्वर दृष्टिगोचर होती है । अब हमें उस क्षेत्र को नन्दन वन बनाने और देव मानव उगाने के लिये सर्वतोभावेन जुटना चाहिये । परमहंस अपने जीवनकाल में तथा उसके उपरान्त उस क्षेत्र पर अपना ध्यान केन्द्रित किये रहे और उच्च आत्माओं को उस क्षेत्र में अवतरित करने का परिपूर्णप्रयत्न करते रहे, जिसके फलस्वरूप कई यथार्थवादी सन्तों का वहाँ अवतरण हुआ ।

इस प्रकार उनने अपने जीवनकाल में और मरणोपरान्त अनेकों ऐसे सन्त उत्पन्न किये जिनने भक्ति का वास्तविक स्वरूप अपनाया और प्रचार कार्य द्वारा अध्यात्म का वास्तविक स्वरूप लाखों को समझाया । बंगाल में तो उनने उन दिनों उच्च आत्माओं का भण्डार भर दिया था ।

यह एक तथ्य है कि उच्च उद्देश्यों के लिये तपस्वियों की एवं दिव्य आत्माओं की कृपा उपलब्ध होती है । गाँधी का व्यक्तित्व दैवी अनुकम्पा से चमका था । महामना मालवीय हिन्दू विश्वविद्यालय की, श्रद्धानन्द गुरुकुल काँगड़ी की, हीरालाल शास्त्री वनस्थली बालिका विद्यालय की स्थापना जैसे कार्य अपने व्यक्तित्व के बलबूते पर नहीं, वरन् दैवी अनुकूलता के सहारे ही कर सके । सुग्रीव, विभीषण, नरसी मेहता, सुदामा आदि को उच्चस्थिति प्राप्त कराने में भगवान ही साथ रहे । भागीरथ द्वारा गंगा के अवतरण की प्रक्रिया में शिवजी का कम योगदान नहीं रहा । शिव से ही परशुराम ने वह कुल्हाड़ा प्राप्त किया था, जिसके द्वारा उन अकेले ने ही अगणित अनीति करने वाले सत्ताधीशों के सिर काट दिये । हनुमान सुग्रीव की चाकरी करते समय नगण्य थे, पर जब वे राम काज के लिये तत्पर हुए तो जामवन्त ने अपना विपुल पराक्रम उनके

सुपुर्द कर दिया । बुद्ध ने कुमार जीव को वह सामर्थ्य प्रदान की थी, जिसके बलबूते वे चीन तथा उसके समीपवर्ती देशों में बौद्ध धर्म व्यापक बनाने में सफल हुए ।

समर्थ गुरु रामदास को देश की पराधीनता पर बड़ा क्षोभ था । चारों ओर जो अत्याचार हो रहे थे वे उनसे सहन न होते थे, किन्तु अपना स्वरूप और उद्देश्य छोड़ना भी उनसे नहीं बन पड़ता था । अपना कार्य किसी और के माध्यम से कराने की सूझी, पर इसके लिये पात्रता आवश्यक थी । कुपात्र के हाथ में शक्ति जाने में तो सर्प को दूध पिलाने जैसा अनर्थ ही हस्तगत होता है । उनकी निगाह शिवाजी पर गई, पर बिना जाने अपना उपार्जन ऐसे ही किसको दे दिया जाय ? सिंहनी का दूध लाने और मुस्लिम तरुणी को माँ कहकर लौटा देने के उपरान्त उन्हें पात्रता पर विश्वास हो गया । उन्होंने शिवाजी को शक्ति भी दी एवं भवानी तलवार भी । सामान्य मराठा बालक को उन्होंने छत्रपति बना दिया और स्वतंत्रता संग्राम का शुभारम्भ चल पड़ा ।

भारत पर मध्य एशिया के शक-हूण बार-बार हमला करते और लूट-पाट कर चले जाते थे । इस स्थिति से चाणक्य को बहुत क्षोभ था । उनने आक्रमणकारियों से निपटने और सीमित भारत को विशाल भारत बनाने के लिये एक दासी की कोख से पैदा हुए चन्द्रगुप्त को चुना । वे स्वयं तो नालंदा विश्वविद्यालय की व्यवस्था में संलग्न थे । चन्द्रगुप्त को सफलतायें मिलती चली गयीं और वे भारत का सुदूर क्षेत्रों तक विस्तार करने में सफल हुए । आक्रमणकारियों की तो उनने कमर ही तोड़ दी ।

गाँधी जी सर्वोदय का काम करना चाहते थे, पर राजनीति उन्हें छोड़ नहीं रही थी । उनने विनोबा को चुना और वे देश में रचनात्मक कार्यों को अग्रगामी बनाने में सफल हुए । इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि महान कार्य व्यक्तिगत पुरुषार्थ के आधार पर संभव नहीं होते । श्रेय प्रदान करने के लिये दैवी अनुग्रह ही पृष्ठभूमि में काम करता है ।

सतयुग अवतरण की अभिनव तैयारी

पृथ्वी पर अनेकों बार संकट आये हैं और वह डूबते-डूबते उबरी है । एक बार हिरण्याक्ष उसे पाताल ले गया था । एक बार वृत्रासुर ने उसका अपहरण कर लिया था और इन्द्र समेत समस्त देव समुदाय को पलायन करना पड़ा था भस्मासुर, महिषासुर ने भी विनाश की घड़ी समीप ला दी थी । ऐसे अनेकों प्रसंगों में दैवी शक्तियों ने ही उसका उद्धार किया था । देवों की करुण पुकार सुनकर प्रजापति ने कहा था--"तुम देव लोग उपेक्षा या अहंकारवश एकत्र नहीं हो पाते, इसलिये बलिष्ठ होने पर भी दैत्य समुदाय के आगे हार जाते हो ।" उनकी संयुक्त शक्ति दुर्गा के रूप में एकत्रित हुई और उनने असुरों के संकट से देवों को बचाया ।

यह तो पौराणिक प्रसंग हुआ । वैज्ञानिकों के अनुसार. पुरातन काल में एक ग्रह था--'फैथान' । उसकी सभ्यता आज से भी बढ़ी-चढ़ी थी और विज्ञान के महाघातक अस्त्र उस ग्रह के वासियों ने एकत्रित कर लिये थे । शक्तियाँ प्राप्त कर लेना एक बात है और उनका सदुपयोग करना दूसरी । वे अहंकारी सत्ताधारी परमाणु आयुधों से लड़ पड़े और न केवल जीव सत्ता का, पदार्थों का वरन् समूचे ग्रह का सर्वनाश कर दिया । फलस्वरूप उस ग्रह के छर्रे-छर्रे उड़ गये । उन्हीं टुकड़ों में से कुछ मंगल और वृहस्पति के बीच में एक उल्का माला के रूप में घूमते हैं । कुछ शनि के इर्द-गिर्द छल्ले के रूप में एवं कुछ प्लेटो नेपच्यून तक उड़ गये । कहते हैं कि उसी कबाड़ से सृष्टा ने पृथ्वी की नूतन संरचना की । जो हो, सृष्टा के इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी सबसे सुन्दर कलाकृति है । जब-जब भी इस पर विनाश संकट आते रहे, तब-तब उसकी रक्षा होती रही है । कोई न कोई उपाय निकलता रहा है । एक बार दधीचि की अस्थियों का वज्र बना था । एकबार संघ शक्ति दुर्गा ने विनाश की विपत्ति बचाई थी । इस बार भी ऐसा ही होने जा रहा है ।

प्रस्तुत संकट के संदर्भ में दिव्यदर्शी आत्मवेत्ता कहते रहते हैं कि चौदहवीं सदी, सेविन टाइम्स, खण्ड प्रलय, हिमयुग, समुद्री उफान के रूप में पृथ्वी पर ऐसी विपत्ति बरसेगी जिससे कुछ बचेगा नहीं । मूर्धन्य

मनीषियों का भी यही कहना है कि प्रदूषण, पर्यावरण, विकिरण, अणुयुद्ध, जनसंख्या विस्फोट आदि के फलस्वरूप संसार तेजी से महाविनाश की ओर जा रहा है । तीसरे अन्तरिक्षीय युद्ध की संभावना तो हर पल सामने है ही ।

सृष्टा ने महाविनाश से पूर्व ही बचाव की व्यवस्था बनाई है । संसार में सृजन को जन्म देने वाली सबसे बड़ी शक्ति तप है । उसी ने ब्रह्मा को सृष्टि बनाने की शक्ति दी थी । उसी के बल से संसार में सुव्यवस्था स्थिर है । सारे ऋषिगण तपस्वी रहे हैं, उन्होंने तप विज्ञान से उत्तराखण्ड को देव लोक बनाने के लिये हिमालय के इस ध्रुव केन्द्र में प्रचण्ड तप किये और व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, विश्वामित्र, भारद्वाज, जमदग्नि, कश्यप प्रभृति ऋषिगणों एवं ध्रुव पार्वती इत्यादि साधकों ने इसे देव भूमि बना दिया । उन्होंने संसार को समुन्नत, सुसंस्कृत बनाने वाले अपने नेक प्रयास तप शक्ति से इस प्रकार सम्पन्न किये जिनके कारण यह धरती समूचे ब्रह्माण्ड में मुकुटमणि बन गयी ।

प्रस्तुत समय के उल्टे प्रवाह को उलटकर सीधा करने के लिये बहुत बड़ी शक्ति चाहिये सो भी मानवी नहीं दैवी ? इसे किस प्रकार जागृत और एकत्रित किया जाय ? उसे धरती निवासियों के पीछे किस प्रकार लगाया जाय ? यह एक बहुत बड़ा काम है । सबसे बड़ी समस्या समर्थों की दिशा मोड़ने की है । चाहे धनवान हों चाहे शासक, चाहे साहित्यकार हों चाहे धर्माध्यक्ष, सभी उलटे मार्ग पर चल रहे हैं । लोक मंगल की बात तो करते हैं, पर सभी को अपने स्वार्थ साधन की पड़ी है । इस समुदाय की अपनी क्षमता ध्वंस से मोड़कर सृजन में–स्वार्थ से विरत होकर परमार्थरत हो सके तो शालीनता का वातावरण बनने में कुछ देर नहीं लगे ।

इस बार भी तप शक्ति को महाविनाश के सम्मुख जुटाया गया है और वह प्रयास व्यर्थ नहीं गया है । पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक जो विनाश की घटायें उमड़ रही थीं वे अब छँटने लगी हैं । स्थिति को अपनी दिव्य दृष्टि से देखने वाले कहते हैं कि अदृश्य वातावरण में रावण, कुम्भकरण, जरासन्ध, हिरण्यकश्यपु जैसों की जो हुँकारें गरज रही थीं, वे अब शान्त हो चली हैं, उनका भी समाधान होकर रहेगा । अब भयाक्रान्त होने की आवश्यकता नहीं है । राम राज्य का उषाकाल समीप है । अब यह किसी कुहरे के नीचे देर तक छिपा नहीं रह सकता ।

नई सृष्टि बनाने के लिये ब्रह्मा ने, विश्वामित्र ने जो तप किया था,

दैवी शक्ति के

उसका प्रयोग इन दिनों चल रहा है । अपने युग के इस तपस्वी से जन-जन परिचित है और यही विदित है कि अब तक जो काम उसने हाथ में लिये हैं, वे पूरा करके दिखाये हैं । आर्ष ग्रन्थों को सर्व सुलभ करना, विशाल प्रज्ञा परिवार का असाधारण संगठन, सहस्र कुण्डी गायत्री यज्ञ, लोक मानस के परिष्कार का युग साहित्य, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के अभिनव प्रयास, परमार्थ प्रयोजनों के लिये जीवन दान देने वाले सहस्रों देवमानवों का निर्माण आदि-आदि ऐसे काम हैं जो आज की परिस्थितियों में किसी सामान्य मानवी शक्ति के बलबूते की बात नहीं है । ऐसे महान कार्य तप शक्ति के बिना और किसी प्रकार नहीं हो सकते । तप के प्रभाव से ऋषियों और देवताओं का अनुग्रह प्राप्त होता है और इन सबके संगठन से एक ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जिसे अद्भुत अनुभव कहा जा सके । सामान्य मनुष्य जब कभी अद्भुत काम करते हैं, युग परिवर्तन जैसे काम हाथ में लेते हैं तो समझना चाहिये कि इसके लिये इन्होंने तप की शक्ति एकत्रित कर ली है । वस्तुतः यह काम साधारण व्यक्ति नहीं करते, उनके पीछे कोई परोक्ष महती शक्ति काम कर रही होती है ।

प्रज्ञा अभियान के मूल में तप शक्ति ही काम कर रही है, ऐसा तप जिसके बल पर शेषनाग धरती को सिर पर उठाये हुए हैं, ऐसा तप जिसके कारण तपता हुआ सूर्य लोक-लोकान्तरों में आलोक और ऊर्जा का वितरण करता, परिभ्रमण करता रहता है । इन दिनों इस तप के सहारे ही मनुष्य में से विष निचोड़ा जा रहा है और उसकी आकृति वही बनी रहने पर भी प्रकृति में आमूल-चूल परिवर्तन लाया जा रहा है । इसे एक दैवी आश्वासन समझा जाना चाहिये कि कल तक जो महाविनाश के हजारों कारण और लक्षण दीख पड़ रहे थे, वे घट चले और हट भी चले ।

स्मरण रखने योग्य तथ्य यह है कि भगवान के लिये कुछ भी कठिन नहीं है । वह कलियुग को सतयुग में बदलता है, त्रेता में धर्म राज्य की स्थापना करता है । रावण, वृत्रासुर जैसों के मद को चूर्ण-विचूर्ण करता है । सुदामा, विभीषण, सुग्रीव जैसे विपन्नों को सुसंपन्न बनाता है । हारे हुए देवताओं को महाप्रलय के गर्त में डुबो देता है और सर्व व्यापी जल में से नई सृष्टि रचकर खड़ी कर देता है । वह मानवोचित विचारों को अमानवी वर्चस्व की गरिमा को पुनर्जीवित करने के लिये अन्तःकरणों में भी भारी उथल-पुथल उत्पन्न कर दे तो क्या असंभव

है ? जिसके कौशल से निखिल ब्रह्माण्ड में ग्रह तारक अधर में टँगे और घुड़–दौड़ लगाते हुए ऐसा क्रम चला रहे हैं, जिसे देखते हुए आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है । उसके किसी भी आस्तिक का उपयोगी परिवर्तन उसके अनुग्रह से सम्पन्न हो सकना असंभव नहीं मानना चाहिये ।

नवयुग का आगमन सुनिश्चित है । इक्कीसवीं सदी की सम्पूर्ण व्यवस्था, एकता और समता के सिद्धान्तों पर निर्धारित होगी । हर क्षेत्र में, हर प्रसंग में उन्हीं का बोलबाला दृष्टिगोचर होगा । प्रज्ञा युग इसका नाम होगा । गंगा अवतरण का मन बना चुकी हैं । उसे स्वर्ग से जमीन पर ला उतारने वाले तप की आवश्यकता थी जो हो रहा है वह चलता रहेगा । कठिनाई हल करने के लिये शिवजी ने अपनी जटायें बिखेर दी हैं । अब आवश्यकता भागीरथ जैसे राजपुत्र की रह गयी है जो अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो अपने को भागीरथी का अवतरणकर्त्ता कहलाने का श्रेय भर लेने का साहस करे । अर्जुन को भी यही कहा गया है कि धरती पर दिखाई देने वाले जीवितों का प्राण हरण किया जा चुका है । यदि इच्छा हो तो विजय श्री वरण कर, अन्यथा चुप बैठ । तेरे बिना महाभारत अनजीता न पड़ा रहेगा ।". यों भागीरथ न आते तो भी विधि चक्र ने गंगावतरण तो सुनिश्चित कर ही रखा था ।

युग संधि बारह वर्ष की है । अब से लेकर सन् २००० तक । इक्कीसवीं सदी से नवयुग–सतयुग आरम्भ होने की भविष्यवाणी अनेक आध्यात्मवादी एवं परिस्थितियों का आकलन करने वाले विज्ञानी एक स्वर में प्रतिपादित करते रहे हैं । इस कथन में भविष्य वक्ताओं और ज्योतिर्विदों का भी प्रतिपादन सम्मिलित है । इक्कीसवीं सदी निश्चय ही उज्ज्वल भविष्य का संदेश लेकर आ रही है पर उससे पूर्व कठिन अग्नि परीक्षा से भी हम सब को गुजरना पड़ेगा । इस बारह वर्ष की अवधि में जहाँ तक सृजन का शिलान्यास होगा वहाँ संचित अवांछनीयताओं के दुष्परिणामों से भी निपटना होगा । इसलिये इस अवधि को दुहरे उत्तरदायित्वों से लदा हुआ कहा गया है । इसमें वरिष्ठ जनों को सहभागी बनाकर हनुमान और अर्जुन जैसी भूमिका निभानी होगी । परोक्ष प्रक्रिया भगवान की होगी, पर उसका श्रेय तो इस संदर्भ में प्रबल पुरुषार्थ करने वालों को ही मिलेगा ।

मुद्रक––युग निर्माण प्रेस, मथुरा